।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्‌घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2013-16
दयानन्दाब्द १९१,
सृष्टि सं.-१९६०८५३११५

वर्ष-13 / अंक-22 / फाल्गुन शु. 11 से चैत्र शु. 9 सं. 2071 वि. / 1 से 15 मार्च 2015 / अमरोहा (उ.प्र.) / पृ.- 12 / प्रति- 5/-

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के दीक्षान्त समारोह में मंचासीन केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह व अन्य अतिथिगण -केसरी।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का ११२वां दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

शिक्षा के क्षेत्र में संसार में सर्वोपरि है भारत : राजनाथ

राजनाथ सिंह, महाशय धर्मपाल, डॉ. राम प्रकाश, रमेश पोखरियाल 'निशंक', प्रोपफेसर सुरेन्द्र कुमार सहित उपस्थित थीं अनेक विभूतियाँ

हरिद्वार। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार का 112 वां दीक्षान्त समारोह हर्षोल्लास से 6 फरवरी, 2015 को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत के गृहमंत्री राजनाथ सिंह थे। बीजेपी सासंद व पूर्व मुख्यमंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' व हरिद्वार से विधायक मदन कौशिक भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के आरम्भ में दीपप्रज्ज्वल हुआ। गुरूकुल की छात्राओं ने मनोहर स्वर में सरस्वती वन्दना का गान किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सुरेन्द्र कुमार ने गुरुकुल की रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने उपलब्धियां गिनाते हुए कहा कि कुछ समय से गुरूकुल के साथ अन्याय किया जा रहा है। गुरूकुल पहले "ए" श्रेणी में रखा गया था परन्तु पिछले दिनों इसे "सी" श्रेणी में कर दिया गया जिससे गुरुकुल को मिलने वाली ग्रान्ट व आर्थिक सहायता में भारी कटौती कर दी गई। इसका दुष्प्रभाव गुरूकुल के कार्यों पर पड़ रहा है।

भाषण में गृहमंत्री जी को लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की तरह कर्मठ व लौह पुरुष बताकर उनकी प्रशंसा की गई। इसके बाद स्नातकों को स्वर्ण पदक एवं उपधि वितरण का कार्य सम्पन्न हुआ।

इए अवसर पर गृहमंत्री राजनाथ सिंह को गुरूकुल की उच्चतम मानोपाधि विद्यामार्तण्ड से भी सम्मानित किया गया। दीक्षान्त भाषण देते हुए श्री सिंह ने कहा कि मैं आज इस असाधारण परम्परा से जुड़े हुए स्थान पर खड़ा हूं। इस स्थान पर अपनी उपस्थिति को मैं अपना सौभाग्य मानता हूं। गुरूकुल ने अपने स्थापना काल से अनेक सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वानों को पैदा किया है। उन्होंने कहा कि मुझे यह सुनकर वेदना हुई कि गुरूकुल को "सी" श्रेणी में डाल दिया गया है। उन्होंने आश्वासन दिया कि मैं अपनी पूरी ताकत लगाकर गुरूकुल को उसका उचित सम्मान दिलाऊँगा। उन्होंने कहा कि 'दीक्षा' संस्कार का प्रभावी माध्यम है। ज्ञान अपने आप में पर्याप्त नहीं है। उन्होंने युवकों की अराजक गतिविधियों की चर्चा की और कहा कि जो युवक अराजकता के कार्य करते हैं, उन्होंने अच्छी पढ़ाई की हुई है। ज्ञान जब अच्छे संस्कारों से जुड़ जाता है तो यह लाभकारी बन जाता है। जब ज्ञान का संस्कारों से सम्बन्ध टूट जाता है तो यह विनाशकारी बन जाता है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि स्नातक विद्यार्थी गुरूकुल में प्राप्त शिक्षा एवं संस्कारों का अपने सारे जीवन भर अनुसरण करेंगे। उन्होंने कहा कि भारत शिक्षा के क्षेत्र में संसार में सर्वोपरि है। उन्होंने इसका उदाहरण देते हुए भारत के अनेक विश्व प्रसिद्ध लोगों के नाम लिए जिनमें आर्यभट्ट, चरक, सुश्रुत तथा पाणिनी आदि सम्मिलित थे। उन्होंने सभागार में भारी जन समूह से पूछा कि इन लोगों को संसार में कौन नहीं जानता?इसी क्रम में उन्होंने कहा कि जो ज्ञान व विज्ञान भारत के पास है वह आज भी अन्य देशों के पास नहीं है। उन्होंने एक गणितीय समीकरण की चर्चा कर कहा कि यह भारतीय मनीषियों की ही देन है। हमारे प्राचीन शास्त्रों में इसका वर्णन है।

उन्होंने कहा कि आज विज्ञान ने भी भारत के प्राचीन मनीषियों के इस कथन की पुष्टि कर दी है कि यह सृष्टि आज से लगभग 1 अरब 96 करोड़ वर्ष पहले उत्पन्न हुई थी। उन्होंने यह बताया कि वैज्ञानिक इस सम्बन्ध में सृष्टि को 1 से चार अरब वर्ष पुराना बताते हैं। करतल ध्वनि के बीच उन्होंने कहा कि एक दिन संसार के सभी वैज्ञानिकों को हमारी मान्यता को सत्य मानना पड़ेगा।

उन्होंने कहा कि हमें अपनी प्राच्य विद्या की उन्नति व संरक्षण पर हमें ध्यान देना चाहिये। भारत के प्राचीन मनीषियों ने संसार को "वसुधैव कुटुम्बकुम" का सन्देश दिया। उन्होंने आगे कहा कि संसार के लोगों को श्रेष्ठ बनाने वाला "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का सन्देश भी ईश्वर ने वेद में और भारत के ऋषि-मुनियों द्वारा ही संसार को दिया गया है। उन्होंने कहा कि जो विषेषतायें संस्कृत भाषा में है वह विश्व की अन्य भाषाओं में नहीं है।

मुख्य अतिथि के भाषण के बाद कुलाधिपति डा. राम प्रकाश ने समस्त गुरूकुल के अधिकारियों, शिक्षकों की ओर से धन्यवाद किया। गुरुकुल के दीक्षान्त समारोह में एमडीएच के स्वामी महाशय धर्मपाल, कुलपति प्रोफेसर सुरेन्द्र कुमार सहित अनेक विशिष्ठ विभूतियां उपस्थित थीं। दीक्षान्त समारोह वैदिक परम्पराओं एवं राष्ट्रीय गान के साथ समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

दुनिया में बजेगा हिन्दी का डंका

आगरा। पूर्वोत्तर के राज्यों समेत देश के हर हिस्सों में केन्द्रीय हिंदी संस्थान से जारी होने वाली डिग्री कोर्स को मान्यता दी जायेगी। केन्द्रीय संसाधन विकास मंत्रालय ने इस आशय के आदेश जारी कर दिए है यह जानकारी मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने दी। उन्होंने कहा, हिन्दी की बिन्दी अब दुनिया में चमकेगी। केन्द्र सरकार हिन्दी को वैश्विक स्तर पर फैलाने को जोरदार कसरत करने जा रही है। इसके लिए दुनिया के कई देशों में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के केन्द्र खोले जायेंगे। हिन्दी को बढ़ावा देने वालों को केन्द्र सरकार सम्मानित करेगी। इसके लिए तीन नए पुरस्कार शुरू किये जा रहे हैं। पूर्वोत्तर राज्य के करीब 45 छात्र-छात्राओं ने प्रवीण (बी0टी0सी0 के समकक्ष), पारंगत (बी0एड0 के समकक्ष), निसपथ (एम0एड0 के समकक्ष) डिग्री की मान्यता न होने की केन्द्रीय मंत्री से शिकायत की। छात्राओं का कहना था कि हाल ही में निकले शिक्षक पदों के लिए केन्द्रीय हिन्दी संस्थान को डिग्रियों की अमान्य ठहराया गया है। इसमें उन्हें हिन्दी सीखने के बाद भी शिक्षक की नौकरी नहीं मिल सकती है। इस पर स्मृति ईरानी ने कहा कि सरकार ने आदेश जारी कर दिया है। पूर्वोत्तर राज्यों में हिन्दी संस्थान की तीनों डिग्रियां मान्य होंगी।

आदिवासी बच्चों के साथ जे.एस. दुबे, अरविन्द पाण्डेय, अर्जुन देव चड्ढा व पार्षद रेखालखेरा- केसरी।

आदिवासी मजदूरों व उनके बच्चों को बांटे गर्म कपड़े

अरविन्द पाण्डेय
कोटा।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसमाज विज्ञाननगर में वस्त्र वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें मामा भील व उनके नन्हें-मुन्ने बच्चों को कपड़े वितरित किये गये।

इस अवसर पर आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि कड़कड़ाती सर्दी में आदिवासी दम्पत्ति जब मजूदरी करते हैं, तब ये नन्हें-मुन्ने बच्चे सर्दी से परेशान रहते हैं। कपड़े पाकर पुरुष व बच्चे बहुत खुश हुए।

कार्यक्रम में स्थानीय पार्षद रेखा लखेरा ने कहा कि आर्य समाज का जनसेवा का यह कार्य प्रशंसनीय है। मजदूर भाइयों की सहायता-सेवा करके मुझे हर्ष हो रहा है।

इस अवसर पर आर्य समाज विज्ञान नगर के प्रधान जे0एस0 दुबे, कोषाध्यक्ष कौशल रस्तोगी, डॉ0 केएल दिवाकर, पंजाबी जनसेवा समिति के महामंत्री दर्शन पिपलानी, कुणाल जुल्का, सुरेश लखेरा, कुंजबिहारी खण्डेलवाल, कौशल मघलानी आदि उपस्थित थे।

अथर्ववेद (द्वितीय भाग) काव्यार्थ का विमोचन

- दर्शनाचार्य डॉ0 आशीष ने किया ग्रन्थ का लोकार्पण। बताया जनता का मार्गदर्शक।

पं0 वेदवसु शास्त्री
देहरादून।

आर्य जगत के प्रसिद्ध कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत के काण्ड 6 से 10 तक के अथर्ववेद (द्वितीय भाग) काव्यार्थ ग्रन्थ का विमोचन वैदिक साधन आश्रम, तपोवन के विशाल सभा भवन में किया गया। इस अवसर पर आश्रम के मंत्री प्रेमप्रकाश शर्मा ने कहा कि आश्रम कवि के इस ग्रन्थ को प्रकाशित कर, स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा है।

प्रारम्भ में कवि द्वारा सरस्वती वन्दना का पाठ किया गया, जो इसी ग्रन्थ के काण्ड-6, सूक्त- 68 के मंत्र- 1,२,3 का काव्यार्थ है। कार्यक्रम के संचालक महात्मा उत्तम मुनि ने कवि की प्रशंसा में नरेश सिहाग, 'बोहल', भिवानी (हरियाणा) द्वारा रचित एक कविता का सस्वर पाठ करते हुए कवि को निरभिमानी, शान्त स्वभाव, लोकहित भावना से पूर्ण, वेद के प्रति समर्पित अतुलित विद्वान बताया।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक सत्यपाल 'सरल' ने ग्रन्थ के दो मंत्रों का कवि द्वारा किया गया काव्यार्थ गाकर सुनाते हुए कवि के काव्य की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। देहरादून के गुरुकुल पौधा के ब्रह्मचारी दिनेश ने इसी ग्रन्थ का एक वीर रस पूर्ण काव्यार्थ ओजस्वी वाणी में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दर्शनाचार्य डॉ0 आशीष थे। आपने ग्रन्थ का लोकार्पण करते हुए इसे जनता का मार्गदर्शक बताया, तथा सुझाव दिया कि कवि के परिश्रम को सफल बनाने के लिए इण्टरनेट आदि आधुनिक वैज्ञानिक प्रचार साधनों को अपनाया जाए, जिससे मंत्रार्थ विश्व के विभिन्न भागों में फैले हुए वेदप्रेमियों से जुड़ सकें। प्रचार की दृष्टि से इस ग्रन्थ के चुने हुए गीतों के कैसेट बनाए जाएं। आर्य समाजों को इस दिशा में आगे पैर बढ़ाना चाहिए। उन्होंने बताया कि यह ग्रन्थ पं0 वेदवसु शास्त्री, पुरोहित आर्यसमाज लक्ष्मण चौक, देहरादून, मोबा. : 098970२787२ से प्राप्त किया जा सकता है।

त्रिदिवसीय नि:शुल्क यज्ञ प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

- आचार्य ज्ञानेश्वर ने की यज्ञ के वास्तविक स्वरूप, लाभ, महत्व तथा रहस्यों की वैज्ञानिक विवेचना।
- गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ब्रह्मचारियों ने की उत्तम यज्ञ की व्यवस्था।

कमल कान्त आर्य
पानीपत।

सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास (पंजी0) पानीपत के तत्वावधान में त्रिदिवसीय नि:शुल्क क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर पुण्डरी (कैथल) हरियाणा में विगत 14 दिसम्बर को सम्पन्न हुआ। उक्त शिविर के विशाल पण्डाल में 146 सपत्नीक यजमानों व अन्य यजमानों तथा सैंकड़ों श्रोताओं की उपस्थिति में आचार्य ज्ञानेश्वर (एम.काम, दर्शनाचार्य, रोजड़, गुजरात) के निर्देशन व ब्रह्मत्व में स्वामी बलेश्वरानन्द, स्वामी ब्रह्मानन्द आश्रम बड़ी के सहयोग व आशीर्वाद से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

आचार्य ज्ञानेश्वर ने यज्ञ के वास्तविक स्वरूप, लाभ, महत्व तथा रहस्यों की वैज्ञानिक विवेचना की, तथा सपत्नीक (शिविरार्थियों) को यज्ञमंत्रों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास भी कराया। यज्ञ को लेकर विशेष शंकाओं का सामाधान भी कराया गया। उन्होंने कहा कि यज्ञ से लोगों में कल्याण की भावना उत्पन्न होती है तथा अच्छे कर्म करने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने मानव, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व के प्रति लोगों के कर्तव्यों के पालन पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि वैदिक सभ्यता और संस्कृति ही भारत की सभ्यता और संस्कृति है। वेदमार्ग पर चलने से ही विश्व में शांति हो सकती है। जब से हमने स्वयं को ईश्वर एवं यज्ञ से अलग कर लिया है, तब से ही हम अशांत, दुखी, परेशान, भयभीत आदि हैं।

अन्तिम दिन उन्होंने शिविरार्थियों से दक्षिणा रूप में प्रतिदिन/साप्ताहिक यज्ञ करने का संकल्प भी लिया। लगभग 70-80 शिविरार्थियों ने बड़ी श्रद्धा व उत्साह से अपना संकल्प आचार्य प्रवर को दिया।

इस आयोजन को सफल करने में शिविर की धुरी सभी व्यवस्था को संभाल रहे शिविर के संयोजक राजपाल बहादुर तथा भारत विकास परिषद, फतेहपुर पुण्डरी, आर्यसमाज, पुण्डरी व अनेक महिलाओं एवं पुरुषों का भरपूर सहयोग रहा। नन्दकिशोर शास्त्री के निर्देशन में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 18 ब्रह्मचारियों द्वारा उत्तम प्रकार से यज्ञ व्यवस्था की गयी।

मुख्य अतिथि के रूप में प्रो0 दिनेश कौशिक- विधायक पुण्डरी; अशोक अग्रवाल- प्रधान भारतीय विकास परिषद्, फतेहपुर पुण्डरी; गौरव वालिया- सरपंच फतेहपुर; दीवानचन्द आर्य- भारतीय रेल वित्त निगम, दिल्ली; जोगीराम, रघबीर सैनी- प्रधान; गुलाब सिंह रहे। सभी ने न्यास के इस कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा आर्थिक सहयोग भी दिया।

बाल्मीकि समाज में सामूहिक विवाह

सुमन कुमार वैदिक
बाड़मेर।

आर्यसमाज बाड़मेर द्वारा गत 1 नवम्बर को बाल्मीकि समाज के ग्यारह जोड़ों का विवाह कराया गया। किशनलाल सोलंकी, सुभाष शर्मा, अणदराम कणवासरा, हनुमान राम डउसिया ने विवाह कराया, तथा प्रधान महेन्द्र खत्री ने मंत्रोच्चार किया।

सहारनपुर में हुआ विशेष यज्ञ

- मनाया श्रद्धानन्द बलिदान दिवस।
- स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर डाला प्रकाश

सुरेश कुमार सेठी
सहारनपुर

आर्य समाज खलासी लाइन, सहारनपुर के प्रांगण में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में विशेष यज्ञ हुआ, जिसमें मुख्य यजमान डॉ0 राजवीर सिंह वर्मा सपत्नीक रहे। यज्ञ सुरेन्द्र कुमार चौहान एवं राजकुमार आर्य के संयुक्त पौरोहित्य में हुआ।

यज्ञ के उपरांत आर्य समाज खलासी लाइन के प्रधान बारूराम शर्मा ने कहा कि हम भारतीय संस्कृति की ओर चलें। वैदिक मार्ग से भटके, बहला-फुसला कर गुमराह लोगों का शुद्धिकरण कर, उनको सही मार्ग वैदिक मार्ग पर लाना ही स्वामी श्रद्धानन्द जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उनके बलिदान दिवस के अवसर पर जो भटक चुके हैं, उन्हें शुद्धिकरण कर, भारतीय संस्कृति की मुख्य धारा में लाना एवं वैदिक मार्ग से लोगों को भविष्य में न भटकने देना हमारा ध्येय होना चाहिए। तभी हम अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द महाराज को सच्ची श्रद्धांजलि देंगे।

वैदिक भजनोपदेशक बिजेन्द्र आर्य ने कहा- ''कर सके परमात्मा का जाप कर/ भूलकर न जिन्दगी में पाप कर।''

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ0 पूर्णचन्द्र शास्त्री, वैदिक विद्वान व भूतपूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष जेवी जैन डिग्री कालेज, ने करते हुए कहा कि यह पर्व हमारे जीवन में प्रेरक के रूप में आता है। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन के विस्तृत विवरण बताया, और कहा कि हमें आज उनके जीवन से प्रेरणा लेने की जरूरत है। बलिदान से प्रेरणा लेकर हम समाज के लिए, राष्ट्र के लिए कुछ करने के लिए सदैव तैयार रहें।

डॉ0 राजवीर सिंह वर्मा ने मंच समंचालन करते हुए कहा कि शुद्धिकरण जो इस समय चल रहा है, यह भी उन्हीं की प्रेरणा से हुआ था। तत्पश्चात् शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस दौरान बारूराम शर्मा, सुरेश सेठी, डॉ0 राजवीर सिंह वर्मा, ब्रह्मदेव, शांतिदेवी, मीना वर्मा, रोशनलाल, योगराज शर्मा, राजकुमार आर्य, विजय कुमार गुप्ता, सोमदत्त शर्मा, सुरेन्द्र चौहान, बिजेन्द्र आर्य, सुरेन्द्र कुमार, यशपाल सिंह एडवोकेट आदि उपस्थित रहे।

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ आयोजित

सुमन कुमार 'वैदिक'
मथुरा।

श्री विरजानन्द ट्रस्ट वेद मन्दिर, मसानी चौराहा, मथुरा में प्रतिवर्ष की भांति चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन विगत 6 से २5 दिसम्बर तक किया गया। 18 दिनों तक चलने वाले इस विशाल यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य स्वदेश तथा मुख्य यज्ञमान कृष्णवीर शर्मा (फरीदाबाद) थे।

17 दिसम्बर को नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन योग गुरु स्वामी रामदेव द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ0 सत्यप्रकाश अग्रवाल द्वारा की गयी।

भूल—सुधार

1 से 15 जनवरी २015 के अंक में 'ओ३म् साधना मण्डल द्वारा करनाल में स्वामी विद्यानन्द विदेह का जन्म दिवस मनाया गया' में स्वामी 'विद्यानन्द विदेह' के स्थान पर भूलवश 'स्वामी दयानन्द' नाम छप गया। इसके लिए हमें खेद है।

पर्यावरण संरक्षण हेतु यज्ञ करें

कर्म देता है व्यक्ति का परिचय : वेदानन्द

सुमन कुमार वैदिक
बड़ौत (उ.प्र.)

विजयपाल सिंह आर्य द्वारा 80वें वर्ष में प्रवेश पर आयोजित सामवेद यज्ञ की पूर्णाहुति पर 9 नवम्बर को स्वामी वेदान्त (उत्तरकाशी) ने कहा कि कर्म व्यक्ति का परिचय देता है। यज्ञ का अर्थ भी श्रेष्ठ कर्म है। यह देवकर्म है। कर्म ही व्यक्ति को मंजिल तक पहुंचा देता है। हमारे जीवन का लक्ष्य वहां पहुंचना है, जहां प्रकाश ही प्रकाश है, जहां आनन्द ही आनन्द है। यज्ञ के दो पहिए वाणी और मन हैं। हम एक पहिएं की गाड़ी न बनें। जो बोलें, विचारपूर्वक बोलें। इस अवसर पर आर्य कन्या गुरुकुल की कन्याओं ने वेदपाठ तथा सुमधुर भजनों से लोगों का मन जीत लिया।

राष्ट्रीय सैनिक संस्था के प्रधान कर्नल तेजेन्द्रपाल त्यागी ने बढ़ते जल प्रदूषण पर चिन्ता प्रकट की, तथा कहा कि आज देश में कोई ऐसा बिन्दु नहीं, जिससे हम एक दिखें। हम नमस्ते छोड़ जयहिन्द बोलें। इंजीनियर विजयपाल ने संकल्प लिया कि अब किसी विवाह में नहीं जाऊंगा। क्षेत्र में कन्या के जन्म होने पर 5000/- रु0 दान तथा मृत्यु के उपरांत अपनी देहदान दूंगा। इस अवसर पर मित्रमुनि, आर0पी0 सिंह, मणिलाल त्यागी, लैफ्टीनैंट के0के0 शर्मा, साकिर, सत्यपाल, कैप्टन धर्मसिंह, विजयपाल सिंह, प्रेमसिंह, किरनपाल सिंह, सत्यवती देवी, खुशवती देवी, संजीव कुमार उपस्थित रहे। कर्नल तेजेन्द्र पाल सिंह को उनके जीवन में किये उपकार के कार्यों के लिए सम्मानित किया तथा कम्बलों का वितरण किया गया। भोजन तथा जलपान की सुन्दर व्यवस्था थी।

5 मार्च को होगा होली मंगल मिलन

विनय आर्य
दिल्ली।

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य परिवार होली मंगल मिलन 5 मार्च को रघुमल आर्य कन्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल, राजा बाजार, कनाट प्लेस (स्टेट एम्पोरियम के पीछे) शिवाजी स्टेडियम के पास, नई दिल्ली-1 में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। इस अवसर पर नवसस्येष्टि यज्ञ, विशिष्ट संगीत एवं हास्य रंग की प्रस्तुति, बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम व पुष्पों द्वारा होली मंगल मिलन एवं प्रीतिभोज का कार्यक्रम रहेगा।

आर्य अभिनन्दन

आर्यसमाज के उपदेशक एवं भजनोपदेशक, जिनकी आयु 60 वर्ष अथवा उससे अधिक हो गयी है, हम उन सबका इसी वर्ष में अभिनन्दन करेंगे। आप अपना फोटो, कार्यक्षेत्र, तथा अन्य सूचना भेजें। एक पुस्तिका भी छापी जाएगी। कृपया पत्र व सूचना अग्रांकित पते पर भेजें-

ठाकुर विक्रम सिंह, राष्ट्रीय अध्यक्ष- राष्ट्र निर्माण पार्टी,
ए-41 द्वितीय तल, लाजपतनगर- ।।,
निकट लाजपतनगर मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली- 1100२४
फोन नं.- 011-45791152, 29842527

सवा करोड़ गायत्री के साथ महायज्ञ

आचार्य जयकुमार
फरीदाबाद (हरियाणा)

गुरुकुल यमुनातट मंझावली में २1वें वार्षिक महोत्सव के अवसर पर सवा करोड़ गायत्री तथा चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एवं योग साधना शिविर का आयोजन 4 अक्टूबर २014 से 8 मार्च २015 तक किया जा रहा है।

आर्यावर्त केसरी के मान्य सदस्यों की सेवा में

आर्यावर्त केसरी पाक्षिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रहा है। जिन ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है, उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्यावर्त केसरी का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रूपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1100/- रूपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वे आर्यावर्त केसरी के अधिक से अधिक सदस्य बनाने में सहयोग प्रदान करें।

आशा है आपका सहयोग हमें अवश्य प्राप्त होगा।

—व्यवस्थापक, आर्यावर्त केसरी, अमरोहा (उ.प्र.)

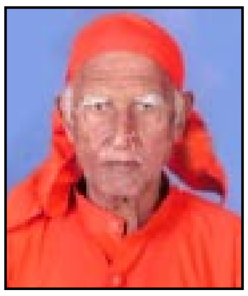

स्वामी प्रवासानन्द जी की वैदिक धर्म प्रचार यात्रा

अभी तक स्वामी प्रवासानन्द जी सरस्वती ने 1963 से २013 तक पूरे 50 वर्ष भारत-नेपाल की वैदिक धर्म प्रचारार्थ साइकिल, मोटर-साइकिल, रेल, बस से यात्रा पूरी करके अब 88 वर्ष की अवस्था में भी रेल, बस से यात्रा कर रहे हैं। क्रम इस प्रकार है- जनवरी, म0प्र0 के खरगोन जिले में नांद्रा वार्षिक उत्सव, फरवरी में टंकारा शिवरात्रि, मार्च-अप्रैल में भारत-भ्रमण, मई में म0प्र0 निनोरा तीसरे सप्ताह, चौथे सप्ताह आबू पहाड़ गुरुकुल उत्सव, जून-जुलाई-अगस्त भारत भ्रमण, सितम्बर चौथा सप्ताह- जोधपुर, अक्टूबर- अजमेर ऋषि मेला, नवम्बर- भारत भ्रमण, दिसम्बर- गांधीधाम, गुजरात, प्रथम पक्ष एवं महू (म0प्र0 चतुर्थ सप्ताह यह यात्रा रहती है।

शुद्ध चैतन्य से महर्षि दयानन्द सरस्वती बने, क्रान्ति तीर्थ- गंगनाथ (चाणोद कर्नाली) में स्थानीय, जिला- बड़ौदा, राज्य स्तर गुजरात, राष्ट्रीय स्तर- भारत, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समारोहों को आयोजन, जिसकी सूचना आर्य पत्र-पत्रिकाओं में आती रहेगी।

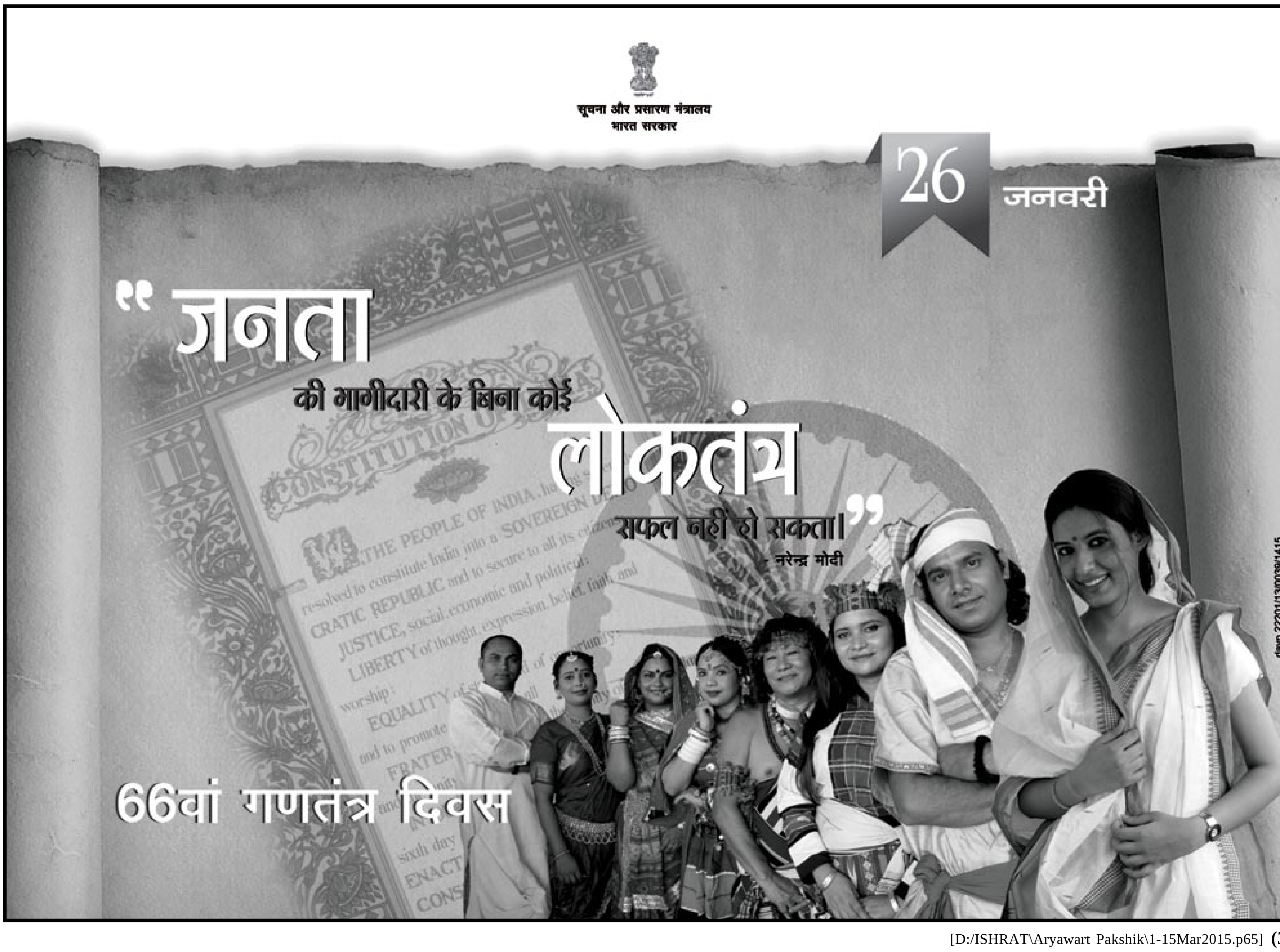

मातृमान्

वेदों में नारी को जो स्थान दिया गया है, वह संसार के अन्य किसी भी वाङ्मय में नहीं दिया गया है। वेद में नारी को ब्रह्मा की उपाधि से विभूषित कर उच्चतम शिखर पर आसीन किया गया है। नारी ने भी वेदाज्ञा को शिरोधार्य कर मानव निर्माण में अवर्णनीय योगदान दिया है। मातृमान् पितृमान आचार्यवान् पुरुषो वेदः। अर्थात इन तीनों के द्वारा सुरक्षित और संस्कारित मनुष्य ही ज्ञानवान बनता है। तीनों में माता का स्थान सर्वप्रथम रखा गया है। कहते हैं कि सौ आचार्यों से बढ़कर एक पिता होता है, और एक हजार पिताओं से अधिक महत्वपूर्ण स्थान, उत्तरदायित्व एक माता का है। मराठी में एक कहावत है जिसका अर्थ है ''जिसके हाथ में पालने की डोरी, वही जग का उद्धार करे'' मानव के जीवन निर्माण में सर्वोपरि एवम् सर्वप्रथम स्थान है माता का गर्भ। नौ मास तक माता के अंग–अंग से बालक के अंग–प्रत्यंग का निर्माण होता है। माता सात्विक आहार एवं उच्च विचारों से बालक के मन–मस्तिष्क को परिपुष्ट कर, उन्नत बनाती है। गर्भ में बालक के जो संस्कार बनते हैं, वे प्रबल होते हैं। अभिमन्यु ने चक्रव्यूह का भेदन माँ के गर्भ में ही तो सीखा था। माँ का गर्भ और गोद, जीवन–निर्माण की वह आधार शिला है, जिसके समान संसार का कोई भी विश्वविद्यालय मायने नहीं रखता। स्वामी विवेकानन्द ने भी अपनी माता की गोद को अपने आध्यात्मिक जीवन को बनाने वाली युनिवर्सिटी कहा था। नेपोलियन बोनापार्ट ने भी कहा था ''आप मुझे एक अच्छी माता दो, मैं तुम्हें अच्छा राष्ट्र दूंगा''। जगद्गुरू महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कार विधि की रचना करके ऋषियों की जीवन शैली एवं सच्ची वैदिक मर्यादा के पालन हेतु सोलह संस्कार के महत्व को दर्शाया है। तीन संस्कार (गर्भाधान, पुंसवन व सीमन्तोनयन) माता के गर्भ में बालक के जन्म से पूर्व ही किये जाते हैं। संस्कारवान होने से ही संस्कृति फलती–फूलती है।

वैदिक काल में नारी जन्मदात्री ही नहीं, जीवन–निर्मात्री भी होती थी, माता मदालसा इसका जीवंत उदाहरण है। '' शुद्धोऽसि बुध्दोऽसि निरंजनोऽसि–संसार माया परिवर्जितोऽसि'' की घुट्टी पिलाकर तीन बालक वैराग्यवान बना दिये। अन्त में राजा की ईच्छा का मान रखते हुए, एक बालक शूरवीर, युद्धकला में निपुण, राजनीति से युक्त करके राजगद्दी का वारिस बना दिया। माता जीजाबाई ने वीरता, साहस आदि गुण युक्त कर शिवाजी को छत्रपति बना दिया, जिसने मुगलों की नाक में दम कर दिया था। जब–जब शेरों के दांत गिनते भरत और लव–कुश का नाम आता है, तो नारीरत्न शकुन्तला और सती सीता का सहसा स्मरण हो जाता है। एंसी ही माताओं के तप, त्याग, साहस, सदाचार और संकल्प से कितने महापुरूष माता के नाम से विख्यात हुए, जैसे– सुमित्रानन्दन– लक्ष्मण, अंजनिपुत्र–हनुमान, राधेय– कर्ण, कौन्तेय– युधिष्ठिर और देवकीनन्दन– श्रीकृष्ण।

महाभारत काल के पश्चात् वैदिक संस्कृति का लोप होने से नारी की अवस्था में गिरावट आयी। मुस्लिम काल में बालविवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा, निरक्षरता आदि कुरीतियों से नारी का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया। फिर समय पलटा, अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार–प्रसार से नारी की परतन्त्रता समाप्त होने लगी। पाश्चात्य संस्कृति, सभ्यता, पहनावा, बोलचाल को जीवन लक्ष मानकर नारी सन्नारी के पद से विहीन हो गयी, अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो कर्तव्य से विमुख हो गयी। सम्मिलित परिवार के स्थान पर एकल परिवार होने से बच्चे दादी–नानी की प्रेरणादायक कहानियों से वंचित हो गये। आचार–विचार के गिरावट में दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों का भी कम योगदान नहीं है।

आज देश में जो उपद्रव, अनाचार, बलात्कार, भ्रष्टाचार की आंधी आयी है, उसका मूल कारण है सुसंस्कारों का न होना। शुद्धाचरण, संयम सदाचार, धार्मिकता का कोई मूल्य नहीं रहा। अतः अब नारी को साहस, संबल और विवेक से अपने कर्तव्य को पहचानते हुए कर्मक्षेत्र में कूदना ही होगा। बेटा हो या बेटी, दोनों को समान शिक्षा, समान संस्कार देने की आवश्यकता है। बेटों को मातृवत पर दारेषु का पाठ पढ़ाना होगा। हे नारी! मानव समाज को प्रबुद्ध कर, समाज–शोधन के कार्य में अग्रसर हो कर अपनी संतान को धर्मभक्त, देशभक्त और मानवता का पुजारी बनाकर भारतीय संस्कृति–सभ्यता की सुगंध दिग्दिगन्त में फैला दो। राष्ट्रहोम में अपनी आहूति प्रदान करने का पुनीत कार्य कर दो। ताकि सभी कह सकें कि 'नारी नर को बनाने वाली है।'

अतिथि सम्पादकीय– निर्मला वसु, पानीपत

गीता नहीं, वेद हो राष्ट्रीय ग्रंथ

आर्य प्रह्लाद गिरि

अदालतों में कसम खायी जाने वाली गीता ही क्या भारत का प्राचीनतम सर्व विद्याओं की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है? क्या गीता में ही राष्ट्रभक्ति के एवं पृथ्वी सूक्त हैं? नहीं, तो फिर क्यों वेद को छोड़ कर इसे ही इतना गौरवान्वित किया जा रहा है?

'जय' नाम के बाद 'भारत', फिर यही कहलाया 'महाभारत'। इसके ही प्रक्षिप्तांशों में एक अध्याय का नाम है–श्रीमद भगवत गीता। इसमें सर्वप्रथम 70 श्लोक थे, फिर 745 श्लोक हुए, अब 700 श्लोक हैं। इसके अनेक श्लोक पुनरूक्ति दोष, अप्रासंगिक एवं अविश्वसनीय हैं।

जब दोनों तरफ से युद्धारंभ का शंख बज चुका हो, तब लाखों चमकते गदा–तीर–तलवारों को अचानक स्वतः, तीन घंटों तक चुपचाप रूके रहना, किसी साहित्याख्यान में ही संभव हो सकता है, रणभूमि में नहीं।

इस छोटी–सी पुस्तक में मिली–जुली अनेक अच्छी बातें भी हैं, जिनसे प्रभावित होकर शंकराचार्य, दयानंद, विवेकानन्द, गांधी, तिलकादि इसका उपयोग करते हुए भी इसकी मौलिकता व ऐतिहासिकता पर एकमत नहीं रहे। डॉ0 श्रीराम आर्य की पुस्तक 'गीता–विवेचन' के अनुसार यह गीता पांच हजार वर्ष पूर्व के महर्षि वेद व्यास रचित नहीं है। इसकी रचना बौद्धों और जैनियों के जमात में बहते जा रहे सनातनियों को रोकने हेतु ढाई हजार वर्ष पूर्व किसी कुशल कवि द्वारा की गई है। बुद्ध और जैन तीर्थंकरों का नाम लिये बिना ही तुलनात्मक एवं सांकेतिक भावों में महाभारत के नायक योगेश्वर श्री कृष्ण को इसलिये सर्वपूज्य सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर बताने का सफल प्रयास किया गया है, ताकि इनके मुख से बलपूर्वक कहे गये इन संदेशों को मानने से कोई इंकार न करे।

'सर्व धर्मान् परित्यज्य माम् एकं शरणं ब्रज'– ''तुम जैन, बौद्ध, शैव, शाक्त, वाममार्गादि सभी धर्मो को छोड़कर बेखौफ मेरे मुख्य सनातन–पथ में लौट आओ। भ्रमवश अधर्मी या विधर्मी बने रहने के सभी पापों से मैं छुड़ा दूंगा। स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्मा होकर मैं गारंटी के साथ ये बार–बार कह रहा हूँ''

बौद्धों, जैनियों व तत्कालीन कुछ सनातनियों को भी आकृष्ट करने हेतु गीता के चतुर रचनाकार ने अनेक अवैदिक बातें तो कही ही, बौद्धों को खुश करने हेतु सीधे–सीधे वेद और यज्ञ की भी निंदा कर दी, देखें– दूसरे अध्याय के 42, 46 एवं 53 वें श्लोक, आठवें अध्याय का 28वां, नौवें अध्याय का 21वां श्लोक, दसवें अध्याय का 22वां श्लोक, और ग्यारहवें अध्याय का 48 वां श्लोक।

मनु जी कहते हैं–जो वेद की निंदा करे, वही नास्तिक है। गीता और गीता महात्म्य में लिखा है कि ''वेदादि सभी शास्त्रों को छोड़कर इसी को पढ़ने में सारा पुण्य मिल जायेगा। क्योंकि यह सीधे विष्णु के मुख से निकली हुई है, जबकि वेद की उत्पत्ति विष्णु की नाभि से जन्मे ब्रह्मा के 1/4 मुखों से हुई है।'' और सचमुच गीता के जन्मते ही वेद पठन लुप्त होने लगा। अब तो ये दशा हो गयी है कि वेद जैसा महान अतुल्य अपोरुषेय ग्रंथ के जीवित रहते हुए भी ऐसी गीता को राष्ट्रीय ग्रंथ बताना, वेद को जीते–जी मार देने जैसा होगा। जबकि डॉ0 सम्पूर्णानंद ने लिखा है–''वेद के जीवित रहने पर गीता जैसी अनेकों पुस्तकें रची जा सकती हैं, किन्तु वेदास्त (वेदज्ञान का लोप) हो जाने पर सैकड़ों तरह के गीता को मिलाकर भी वेद पुनः नहीं रचा जा सकता।''

निंगा, आसनसोल
(मोबा. : 09735132360)

जनवाणी

बस्ते का बोझ

महोदय,

सारे पैरेंट्स अपने बच्चों पर सबसे आगे निकलने का दबाव बना कर रखते हैं। एक तो स्कूल बैग का बोझ और ऊपर से माता–पिता का मनोवैज्ञानिक दबाव। कोई यह नहीं समझ सकता कि बच्चों पर बस्ते के बोझ के साथ–साथ उनके दिमाग पर कितना बोझ होता होगा ? बच्चों को आगे करने के लिए माता–पिता तरह–तरह के तरीके अपनाते हैं। उन्हें बहलाने फुसलाने से लेकर कई तरह का लालच देने में भी माता–पिता पीछे नहीं हटते। अगर बच्चा पढ़ने में कमजोर है या ग्रेड अच्छे नहीं ला रहा, तो बजाय इस बात को समझने के, कि उसकी परेशानी क्या है? उसे डाट फटकार और प्रताड़ना मिलती रहती है, ग्रेड सही करने के लिए उसे हमेशा हिदायत दी जाती है। कभी पहली कक्षा के बच्चे का बैग देखा है। नन्हा सा बचपन ऐसा लगता है मानो इस भारी बस्ते के नीचे घुट रहा है। पैरेंट्स से लेकर टीचर तक बस उसकी कापी–किताब और ग्रेड की बातें करते नजर आते हैं। पहली कक्षा से ही स्कूल का बोझ उसके कंधे, पीठ और दिमाग पर दिखने लगता है। पैरेंट्स हमेशा यही चाहते हैं कि उनके बच्चे ज्यादा से ज्यादा मार्क्स लेकर सबसे आगे रहें। इसके लिए वे अधिक से अधिक पैसे तो खर्च करते ही हैं, साथ ही बच्चों पर पढ़ने का दबाव भी डालते हैं। बच्चों को समय–समय पर इस बात का अहसास भी कराया जाता है कि उस पर कितने पैसे खर्च हो रहे हैं। इस वजह से बच्चों में हीन भावना पैदा होती है और वे प्रतियोगिता में पीछे रह जाते हैं।

ज्यादातर स्कूलों में बच्चों को पढ़ाने के नाम पर बस सिलेबस खत्म करने की सोची जाती है। टीचर और छात्र के बीच का हेल्दी संवाद न के बराबर रह गया है। स्कूल टीचर पढ़ाने के नाम पर बस किताबों के पाठ खत्म कराते नजर आते हैं। बच्चा क्या सीख रहा है, क्या उसे सीखना चाहिए, ये सब अब पुरानी बातें हो गयी हैं। बाहरी दुनिया से तथा अपनों से बच्चे कटने लगते हैं। असाइनमेंट और गृहकार्य के चक्कर में बच्चे फंसते चले जाते हैं। भारत के अलावा अन्य देशों में स्कूलों में बच्चों को भारी बैग से निजात दिलाने के लिए लाकर की सुविधा दे रखी है। उन्हें सिर्फ साथ में होमवर्क की कापी ले जानी होती है। बच्चों के लिए किताबी ज्ञान ही काफी नहीं है, बल्कि उसे सही जानकारी देना भी जरूरी है। बच्चों से उनका बचपन न छीनें क्योंकि बच्चें ही देश का भविष्य होते हैं।

–अतुल कुमार शुक्ला, मुरादाबाद

हम सबके लिए प्रेरणादायक है लाला लाजपतराय की देश भक्ति

बलिदान दिवस पर किया लाला जी को नमन्

दर्शन पिपलानी
कोटा (राजस्थान)

पंजाबी जनसेवा समिति द्वारा लाला लाजपतराय सर्किल पर लाला जी की प्रतिमा के पास आयोजित बलिदान दिवस के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पंजाबी जनसेवा समिति व जिला आर्य सभा के अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि आज का दिन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में बहुत बड़ा दिन है, जिसके फलस्वरूप हमें आगे जाकर आजादी मिली और खोया हुआ गौरव प्राप्त हुआ। स्वराज और स्वदेश का ज़ज़्बा लाला जी को महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज से ही मिला।

कार्यक्रम में वार्ड पार्षद जसपाल अरोड़ा बिट्टू ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनानी लाला लाजपतराय की राष्ट्रभक्ति हम सबके लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने अंग्रेजों का वीरतापूर्वक विरोध किया। उनकी महान शहादत के कारण ही वे पंजाब केसरी कहलाये।

लाला लाजपत राय सर्किल पर जयघोष करते आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुन देव चढ्डा व अन्य- केसरी।

इस अवसर पर आर्यावर्त केसरी के सम्पादक डॉ. अशोक आर्य ने कहा कि लाला जी ने लाल-बाल-पाल की टीम बनाकर आजादी के लिए संघर्ष किया। अंग्रेजों द्वारा उनके ऊपर किये गये लाठियों के प्रहार को अंग्रेजी हुकूमत के ताबूत की एक-एक कील बताया। श्रद्धांजलि देने वालों में युवा नेता मयंक सेठी, समाजसेवी गुलशन दुआ, राजीव दुआ, पत्रकार बद्रीप्रसाद गौतम, राजीव आर्य व गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। उपस्थित सभी लोगों ने 'लाला लाजपतराय अमर रहें', 'पंजाब केसरी अमर रहें', 'हिन्द केसरी अमर रहें' के नारे लगाये। जसपाल अरोड़ा बिट्टू ने सभी का आभार व्यक्त किया।

२१ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

प्रवीण आर्य
गाजियाबाद।

22 फरवरी, 2015 को पहल ग्रुप एवं आर्य समाज इन्दिरापुरम के संयुक्त तत्वावधान में 21 कुण्डीय विश्व कल्याण गायत्री महायज्ञ मजार पार्क, केसिया रोड, शिप्रा सनसिटी, इन्दिरापुरम में धूम–धाम से सम्पन्न हुआ। महायज्ञ आर्ष गुरूकुल नोएडा के प्राचार्य डॉ0 जयेन्द्र कुमार के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। वेदपाठ कन्या गुरूकुल सोरखा नोएडा की ब्रह्मचारिणियों द्वारा किया गया। महायज्ञ के पश्चात् आचार्य जी ने मन को साधने के उपाय बताये एवं यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डाला । उन्होंने योगेश्वर श्रीकृष्ण द्वारा दिये गये गीता के उपदेशों पर विस्तृत चर्चा की और कहा कि अहंकार का त्याग कर परमात्मा के प्रति समर्पित व्यक्ति ही विशेष सुखों को प्राप्त कर सकता है। इन्द्रियों पर मन का, मन पर बुद्धि का नियंत्रण रख कर आत्मा और बुद्धि को परमात्मा के प्रति समर्पित कर देने से ही कल्याण संभव है।

इस अवसर पर दिल्ली से पधारे भजनोपदेशक संदीप आर्य एवं साथी कलाकारों द्वारा गाये गये ईश्वर भक्ति के गीतों ने समां बांध दिया।

मुख्य अतिथि के रूप में पधारे स्वदेशी आयुर्वेद के निदेशक डॉ आर0के0 आर्य ने बताया कि परमपिता परमात्मा न्यायकारी एवं दयालु है। वह प्रत्येक मनुष्य के द्वारा किये जा रहे अच्छे अथवा बुरे कर्मों का साक्षी होते हुये अपनी अखण्ड न्याय व्यवस्था में ठीक–ठीक फल प्रदान करता है। किया गया कर्म जब तक फल नहीं भुक्ताता, तब तक पीछा नहीं छोडता और जन्म–जन्मान्तर तक साथ रहता है। इसलिए जो भी काम करें अच्छा करें ताकि उस किये गये कार्य से अपना और जीवमात्र का भी कल्याण हो।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उ0प्र0 के महामंत्री प्रवीण आर्य ने हवन पर चर्चा करते हुये बताया कि पर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम व योगेश्वर श्रीकृष्ण प्रतिदिन हवन किया करते थे। उन्होंने कहा कि हवन करने वाले के घर कभी किसी चीज की कमी नहीं रहती तथा वे जीवन में धन–धन्य से सम्पन्न व निरोगी रहते है। अतः मनुष्य को प्रतिदिन हवन व संध्या के माध्यम से प्रभु का आभार व्यक्त करना चाहिये।

इस अवसर पर स्थानीय पार्षद कपिल त्यागी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ऐसे परोपकार के कार्य निरंतर होते रहने चाहिये जो कि प्रदूषण पर नियंत्रण रखने में मदद करते हैं और ऐसे महायज्ञों से सुगंधी फैलती है तथा स्वाइन फ्लू जैसी घातक बीमारियों से भी बचा जा सकता है।

कार्यक्रम का कुशल संचालन आर्य समाज इन्दिरापुरम के यशस्वी मंत्री यज्ञवीर चौहान ने किया। आर्य समाज के प्रधान विजय कुमार आर्य ने दूर–दराज से पधारे सभी अतिथियों को ध न्यवाद दिया।

इस अवसर पर मुख्य रूप से सर्वश्री सी0पी0 बालयान, वीरेन्द्र सिंह ढाका, आवेश त्यागी, सी0के0 सूत्रधार, विजय राघवान, सी0एम0 आर्य, नोतन दास नन्दा, प्रदीप कुमार गुप्ता, सुरेश आर्य, प्रमोद चौधरी, सुरेश प्रसाद, राहुल आर्य आदि उपस्थित रहे।

देवयज्ञ एक सर्वांगपूजा : वैदिक

नई दिल्ली। देवनगर आर्यसमाज के साप्ताहिक यज्ञ–सत्संग में रमेश बेदी एवं अशोक मिश्रा ने सुमधुर एवं प्रभावी भजनों की प्रस्तुति कर, सभी का मन मोह लिया। मुख्य वक्ता आर्यावर्त केसरी के प्रबन्ध सम्पादक सुमन कुमार वैदिक ने अपने उद्बोध न में कहा कि देवयज्ञ एक सर्वांगपूजा है, जिसमें बाह्य और आन्तरिक जगत दोनों के पंचमहाभूतों सहित सभी देवताओं की पूजा हो जाती है। वेदमंत्रों से दी गयी आहुति शब्दों के साथ संबन्धित वेद के देवता पर जाती है।

सामवेद का मंत्र कहता है कि 'अग्निदूतं वणीमहे होतारं विश्ववेदसाम्।' –यज्ञ एकान्त रमणीय विघ्नों से रहित शान्त प्रदेशों में, पर्वतों, नदियों के निकट करने का विधान सामवेद का मंत्र 'उपहरे गिरीणां संगमे च नदीनाम् धियो विप्रा उजायत्' कहता है। अग्नि के तीन भाई हैं- सूर्य, द्यौ, अन्तरिक्ष, जिन्हें वह भोजन देता है। अन्य प्रकार की पूजा सर्वांग पूजा नहीं होती। जैसे पीपल को पानी देने से पीपल को लाभ होगा, अन्य महाभूतों को नहीं। मूर्तिपूजकों को इस विषय को समझना होगा। द्रव्य का यज्ञ में सदुपयोग करने वाले पवित्र और महान होते हैं।

आर्यसमाज के प्रधान पं0 नफेसिंह देसवाल ने ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के प्रवचनों के विषय में कहा कि उनके प्रवचनों में बहुत से अनुबुझे प्रश्नों, जैसे- सीता, हनुमान, कुश, मकरध्वज, इत्यादि के जन्म, रावण की नाभि में अमृत, द्रोपदी चीर हरण जैसी घटनाओं के सही वैज्ञानिक उत्तर हमें मिलते हैं।

श्रीराम की भावना व संदेश को पहचानिये : डॉ. अशोक

अफजलगढ़ (बिजनौर)। आर्य समाज में आयोजित यज्ञ में ब्रह्मा डॉ0 अशोक रस्तोगी ने अपने सारगर्भित सम्बोधन में श्रीराम का उल्लेख करते हुए कहा कि क्या वास्तव में आसुरिक सम्पदा पर सात्विक सम्पदा की विजय हो सकी है? क्या सचमुच असुर रावण का अन्त हो चुका है? क्या सत्य अर्थो में राम विजयी हो सके हैं?

डॉ0 रस्तोगी ने उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि भगवान श्रीराम तो एक प्रतीक हैं असत्य पर सत्य की विजय के, किन्तु क्या उस महान प्रतीक का अवलम्बन ले हम अपने राष्ट्र को राम राज्य बना सके हैं? इस प्रश्न का उत्तर उन राजनीतिज्ञों से पूछा जाना चाहिये, जिनके कन्ध ों पर राष्ट्र की अस्मिता का दायित्व प्रजा ने सौंपा है और यही प्रश्न अपने अन्तर्मन से भी पूछना चाहिये।

यज्ञ के ब्रह्मा ने याज्ञिकों को उत्प्रेरित करते हुए कहा कि हे आर्य पुत्रों ! श्रीराम की भावना व संदेश को पहचाहिये, नहीं तो हमारा देश नष्ट हो जायेगा। हमें आसुरी शक्तियों के विरोध का संकल्प लेना चाहिये।

कार्यक्रम में चौ0 चरण सिंह आर्य, अवधेश आर्य, सुरेशपाल आर्य, शुभम विश्नोई, अरूण विश्नोई, पूरण सिंह ध्यानी आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

निर्वाचन- आर्यसमाज
सिहोरा गिरधरपुर (बिजनौर)

प्रधान- डॉ0 अजयकुमार आर्य
मंत्री- कलवा सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष- पुखराज सिंह आर्य
पुस्तकालयाध्यक्ष- होशियार सिंह आर्य

वैदिक सत्संग २८ से

बेरछा (शाजापुर) म.प्र.। आर्यसमाज द्वारा २८ से 30 अप्रैल २०१५ तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं वैदिक सत्संग समारोह का आयोजन डॉ. ओमानन्द सरस्वती के निर्देशन में होगा। यह जानकारी सत्यपाल शास्त्री (930096२२64) ने दी।

वेद कथा का हुआ भव्य आयोजन

बिजनौर। जनपद के कोतवाली तहसील क्षेत्र के ग्राम सुनपता में दो दिवसीय वेद कथा का आयोजन 'आर्यजनों' के द्वारा कराया गया। यज्ञोपरान्त वेद कथा बांचते हुए युवा वेद कथाकार आचार्य संजीव रूप ने कहा कि 'सुन+पता'' का अर्थ है पता–सुन। अर्थात् हे मनुष्य! तू कौन है, कहां से आया, कहां जाता है, कौन पता, क्या जीवन का लक्ष्य है? हम अक्सर पूछने पर कहते हैं– मैं0 ब्राह्मण, मैं वैश्य, मैं डाक्टर, मैं दरोगा, मैं पुरुष, में स्त्री, मैं बूढ़ा, मैं बच्चा हूं। यह सही उत्तर नहीं है। यही अज्ञान है। सही उत्तर है– मैं जीवात्मा हूं, जो न कभी मरा, न मरेगा। किन्तु ध्यान रहे कि आत्मा तब मृतप्राय होता है," जब व्यक्ति पापकर्म करता है। किन्तु शुभ कर्म करने से जीवात्मा ऊंचा उठता, चमकता व सद्गति को प्राप्त होता है।

इस अवसर पर उनेक शंकाओं का समाधान भी आचार्य श्री रूप जी ने किया। ग्राम के युवा परून आर्य ने यह कार्यक्रम पड़ोस की आर्य समाजों से समर्थन लेकर कराया था। अनेक समाजों के अधिकारी, बड़ी संख्या में ग्राम के स्त्री–पुरूष उपस्थित रहे तथा संचालन मा0 ओमपाल सिंह ने किया। मेनपाल ने अध्यक्षता की।

संक्षिप्त समाचार

▯ **गुरुकुल गोमत, अलीगढ़ का वार्षिकोत्सव** 13 से 15 **मार्च** २015 **तक।**
–स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती
(**मो.** 088598२7910)

▯ **आर्यसमाज हरनावदा (सिहोर, म.प्र.) द्वारा 1 से 4 मार्च २015 तक वैदिक सत्संग का आयोजन।**
–मांगीलाल आर्य, प्रधान
(**मो.** 7489305787)

▯ **चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एवं योग साधना शिविर गुरुकुल यमुनातट, मंझावली (फरीदाबाद) हरियाणा का समापन समारोह** 8 **मार्च** २015।
–जगत सिंह आर्य
(**मो.** 9891917664)

आर्यकन्या गुरुकुल

शास्त्री नगर, लुधियाना- 14100२

प्रवेश सूचना

सत्र- २015-16 **में छठी कक्षा (आयु +9 से -11) वर्ष कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/-) भरकर 31.03. २015 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किये जा सकते हैं)। कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा 05 अप्रैल २015 दिन रविवार को प्रातः 8:00 बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा। –सत्यानन्द जी मुंजाल, कुलपति**

डीएवी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

बुढ़ाना। डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के प्रधान देवेन्द्र पाल वर्मा उत्सव के मुख्य अतिथि थे। उनके वहां पहुंचने पर विद्यालय के प्रबन्धक एवं उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. अरविन्द कुमार ने माल्यार्पण एवं शॉल उढ़ाकर उनका स्वागत किया।

आचार्य चाहिए

आर्य समाज पिम्परी के 'आधुनिक गुरुकुल' हेतु संस्कृत/हिन्दी/अंग्रेजी भाषा के अनुभवी आचार्य चाहिए। इच्छुक महानुभाव संपर्क करें-
मंत्री, आर्य समाज पिम्परी,
महर्षि दयानन्द मार्ग, निकट राधीका
शॉप पिम्परी, पुणे-411017
मो. : 09372411631

पं0 चन्द्रभान आर्य नहीं रहे

सुभाष श्योराण
जींद (हरियाणा)।

शांतिधर्मी मासिक पत्रिका के संस्थापक एवं आद्य सम्पादक पं0 चन्द्रभानु आर्य का देहावसान २३ दिसम्बर को हृदयगति रुकने से हो गया। आर्यजगत के ख्यातिप्राप्त भजनोपदेशक तथा शांतिधर्मी पत्रिका के संचालक व सम्पादक पं0 चन्द्रभान आर्य का जन्म सन् 1930 **में ग्राम लुहारी, जि0- करनाल में हुआ था। सामयिक आवश्यकता को देखते हुए फरवरी** 1999 **से शांतिधर्मी पत्रिका का प्रकाशन व सम्पादन शुरु किया, जो दिसम्बर २014 तक श्री आर्य के सम्पादन से सुशोभित होती रही।**

4 **जनवरी को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश, स्वामी रामवेश, ब्र0 दीक्षेन्द्र, आचार्य सन्तराम, रायसिंह आर्य आदि सहित सैकड़ों महानुभावों ने अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की।**

आर्य समाजों के नाम खुला पत्र

वेद प्रचार का नया कार्यक्रम अपनाओ

सेवा में,
प्रधान/मंत्रीगण!
महोदय,

आर्यसमाज एक प्रगतिशील क्रांतिकारी आंदोलन है। इसकी स्थापना महर्षि दयानंद ने 1875 ई0 में की थी। इतने कम समय में ही आर्य समाज ने बड़ी उन्नति की है। भारत के सभी नगरों और ग्रामों तक में तथा विदेशों में भी आर्य समाजों के अतिरिक्त अनेक गुरूकुल तथा डीएवी विश्वविद्यालय तथा आधुनिक शिक्षा के लिय स्कूल, कॉलेज स्थापित हो चुके हैं। इनके अतिरिक्त कई स्थानों पर आर्य अनाथालय, औषधालय इत्यादि भी चलाए जा रहे हैं। युवक–युवतियों के लिये आर्य वीर दल, आर्य वीरांगना दल तथा आर्य युवा समाज भी चलाएं जा रहे हैं। कई वानप्रस्थाश्रम तथा वृद्धाश्रम भी चलाए जा रहे हैं। इस प्रकार आर्य समाज का एक विशाल संगठन है। दिल्ली में आर्य समाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा प्रदेशों में आर्य समाजों को कंट्रोल करने के लिये प्रतिनिधि सभाएं तथा उपप्रतिनिधि सभाएं हैं।

आर्य समाज के विद्वानों ने अन्य मतों के विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित करके वैदिक सिद्धांतों का प्रचार किया है परन्तु यह अत्यंत खेद की बात है कि कुछ समय से आये समाज में स्वार्थी तथा पदों के लालची लोग घुस आए हैं। जिनके कारण चुनाव संबंधी झगड़े हो रहे हैं। दुर्भाग्य से इस समय आर्य समाज का कोई सर्वमान्य नेता नहीं है। इसलिये परस्पर झगड़े समाप्त नहीं हो रहे हैं, जो सार्वदेशिक सभा तथा कई प्रदेशों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं तक पहुंच गए हैं। इस कारण आर्य समाज पाखंड और अंधविश्वास के विरूद्ध कोई आंदोलन नहीं कर रहा है। इससे आर्य समाज की छवि धूमिल हो रही है और साप्ताहिक सत्संगों में हाजिरी घटती जा रही है। नए सदस्य बन नहीं रहे और पुराने दिवंगत होते जा रहे हैं। आर्य समाज के अधिकारी वेद उपदेश करने से डरने लगे हैं कि लोग नाराज न हो जायें। वेदों में ईश्वर को निराकार बताया गया है और यह भी कहा गया है कि उसकी कोई मूर्ति नहीं है। अधिकांश परिवार भी आर्य नहीं हैं। इस तरह आर्य समाज कब तक चलेगा? ईश्वर तो एक ही है जिसका मुख्य नाम वेदों में बताया है वह कभी जन्म नहीं लेता।

वास्तव में हर आर्य समाज तो अपने आप में ही एक इकाई है, इसलिए आर्य समाज के अधिकारियों को किसी से डरना नहीं चाहिए। अपितु प्रेमपूर्वक सिद्धांतों का प्रचार करना चाहिए। किसी बड़े नेता को सभाओं के झगड़े समाप्त करने चाहिए। आर्य समाजों के अधिकारी इसकी चिंता न करें। आर्य समाज केवल साप्ताहिक सत्संगों पर ही सीमित न रहे, बल्कि निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें।

1. आर्य समाजों को जब मंदिर कहा जाने लगा है तो समाज मंदिरों में प्रतिदिन प्रातः और सांय संध्या योगाभ्यास इत्यादि का कार्यक्रम होना चाहिए। हवन एक ही समय छोटे रूप में कर सकते हैं।

2. आर्य समाज के अधिकारियों को महीने में एक–दो बार आर्यसमाज मन्दिर से बाहर किसी पार्क अथवा कालोनी में सत्संग का आयोजन करना चाहिए। साधारण जनता आर्य समाज से जुड़ेगी, जो आजकल दूर होती जा रही है। इससे नए सदस्य भी बनेगें।

3. आर्य समाज के छठे नियमानुसार संसार का उपकार करना इसका मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। भूचाल, बाढ़, अकाल इत्यादि से पीड़ित लोगों की सहायता करनी चाहिए।

4.सामाजिक बुराइयों– दहेजप्रथा, कन्या भूण हत्या, विवाह पूर्व युवक–युवतियों का शारीरिक संबंध बगैरा का विरोध करना चाहिए।

5. हमारा धर्म वैदिक है महर्षि दयानंद के आदेशानुसार सबको यही लिखना–लिखाना चाहिए। इससे परिवार आर्य समाजी बनेगे। हिन्दू कोई धर्म नहीं है, हमारे किसी भी ग्रंथ में हिंदू शब्द ही नहीं है। हमारा प्राचीन नाम सब जगह आर्य ही बताया गया है। यह सबको बताया जाए। जब तक एक भी आर्य जीवित है। तब तक आर्य समाज का प्रचार करता रहे। तभी हम आर्य समाज को चिरकाल तक जीवित रख सकते हैं और वेद का आदेश कृण्वंतो विश्वमार्यम् पूरा कर सकेगें। जो हमेशा चलता रहेगा। धर्म अथवा मत तो हमेशा चलते रहते हैं, समस्याएं चिरकाल तक नहीं चलती।

6. आर्य समाज के सदस्य वैदिक सिद्धांतानुकूल आचरण करें। अगर दैनिक सत्संग में न जा सके तो अपने घर में दोनों समय संध्या अवश्य करें तथा कभी–कभी शुभ अवसरों पर हवन भी करें व कराएं।

7. सदस्यों को आर्य समाज को चंदा और दान देने में कंजूसी नहीं करनी चाहिए। अपनी आय का शतांष अथवा 1000/– रूपये वार्षिक चंदा अवश्य दिया करें।

आर्य हमारा नाम है वैदिक हमारा धर्म। ओम हमारा ईश है यज्ञ योग हमारा कर्म।। सत्य हमारा लक्ष्य है गायत्री महामंत्र। भारत हमारा देश है सदा रहे स्वतंत्र।।

–अश्वनी कुमार पाठक, सी–233, नानकपुरा, साउथ मोतीबाग, नई दिल्ली–100021
दूरभाष–011–26871636

आर्य वीरदल की स्थापना क्यों?

हरिश्चन्द्र आर्य

देश में कुछ ऐसी घटनाएं घटी जिनके कारण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा घोषित आर्य वीरदल की परम्परा प्रारम्भ हुई।

1. कांग्रेस (1921) द्वारा संचालित अहसयोग आन्दोलन के सिलसिले में भालावार में भोयलाओं द्वारा हिन्दुओं पर भीषण आक्रमण और अत्याचार हुए।
2. महात्मा गांधी ने हिन्दुओं की उपेक्षा कर मुसलमानों को बढ़ावा देने की नीति अपनाई।
3. हसन निज़ामी षडयन्त्र आरम्भ हुआ। (खतरे की घंटी)
4. विविध प्रकार से हिन्दुओं को बहला फुसलाकर धर्म परिवर्तन को बढ़ावा।
5. अंग्रेजी शासन ने मुस्लिमों का पक्ष लिया।
6. मस्जिदों के आगे बाजे न बजाने का दुराग्रह आरम्भ।
7. हिन्दुओं की रामलीलाओं और आर्य समाजों के नगर कीर्तन प्रतिबन्धित।
8. समय–समय पर होने वाले हिन्दु मुस्लिम दंगें होने लगे। ईद, बकरा ईद पर झगड़े होने लगें।
9. स्वामी श्रद्धानन्द, महाशय, राजपाल आदि के बलिदान हुए।
10. हैदाराबाद के ऐतिहासिक झगड़े।
11. नौआरवाली कांड हुआ।
12. भारत और पाकिस्तान के बटवारे के अवसर पर नृशंस हत्या कांड हुए।
13. वोटों को प्राप्त करने के लिए निमित गणेशोत्सव की परम्परा ने साम्प्रदायिकता को नये रूप में प्रोत्साहित किया।
14. केन्द्रिय शासन का शैथिल्य और साथ–साथ प्रादेशिय शासन का भ्रष्टाचार, झगड़े में हमारी रक्षा न कर सका।
15. हिन्दुओं का निरन्तर विघटन।
16. सीमान्त प्रदेशो में इसाईयों और विदेशियों का समवेत कुचक्र चला।
17. विदेशी मुस्लिम देशों की भारतीय मुसलमानों में अभिरूची और हिन्दुओं के फिर से मुसलमान बनाने का नया चक्र और नये पाकिस्तान को फिर से स्थापित का स्वप्न।
18. हिन्दुओं की राजनीति के क्षेत्र में स्वार्थमयी पारस्परिक फूट।

अमरोहा (उ.प्र.)

आर्य विभूति- जगदीश शरण आर्य

ऐसे होते हैं आर्य

आर्य समाज विचारधारा व वैदिक चिन्तन को आत्मसात् करने वाले बरेली आर्यसमाज बिहारीपुर के कर्मठ सेवक व आर्य विभूति जगदीश शरण आर्य का जन्म 1918 में हुआ था। आप बाल्यावस्था से ही ऋषि दयानन्द की वैदिक विचारधारा के अनुयायी व प्रभावित थे। आर्यसमाज अनाथालय व आर्यसमाज बिहारीपुर को ऊंचाइयों तक पहुंचाने में निष्ठापूर्ण कार्य किया। आप आर्यसमाज बिहारीपुर व अनाथालय के कई वर्षों तक प्रधान रहे तथा अनेक धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं के आजीवन सदस्य भी थे।

आपकी पत्नी सूरजमुखी अत्यंत सरल, तपस्वी थीं। वे दोनों समय दैनिक यज्ञ करती थीं। आपका जन्म 1920 को हुआ था। आर्य विद्वानों, विदुषियों व संन्यासियों को दान-दक्षिणा व भोजनादि कराने में आप अत्यंत निष्ठावान तथा दान भावों से ओतप्रोत थीं। परिवार में शिष्टाचार, सदाचार व वैदिक भावों को हृदय में समाविष्ट करने वाली परम तपस्वी साक्षात् देवी स्वरूपा, मातृभावों से युक्त परिवार में आत्मीय, एकत्व की भावना से युक्त श्रेष्ठ संस्कार प्रदान करने वाली देवी थीं।

परम आदरणीय जगदीश शरण आर्य व माता सूरजमुखी ने परिवार व समाज को श्रेष्ठ विचारों में पिरोते हुए अच्छे संस्कारों से युक्त परिवार का निर्माण किया। परिवार व समाज को आत्मीयता का वैदिक संदेश देते हुए जगदीश शरण आर्य 3 जुलाई 2004, तथा माता सूरजमुखी अपने त्याग, तपस्या व सरल भावों को प्रदान करती हुई 16 नवम्बर 2013 को परमपिता परमेश्वर की गोद में अपने सद्विचारों व संस्कारों से युक्त आदर्श भावों को छोड़कर सदा के लिए चली गयीं।

डॉ0 श्वेतकेतु शर्मा
नीम की चढ़ाई, बड़ा बाजार, बरेली
मोबा. 9412289393

महर्षि दयानन्द की महानता

संसार के महापुरूषों में महर्षि दयानन्द की शान निराली है। अन्य महापुरूषों में किसी में एक गुण है तो किसी में दूसरा, कोई विद्वान है तो योगी नहीं, कोई योगी है तो सुधारक नहीं, कोई सुधारक है तो निर्भिक नहीं, कोई निर्भिक है तो ब्रह्मचारी नहीं, कोई ब्रह्मचारी है तो संन्यासी नहीं, कोई संन्यासी है तो निर्भीक वक्ता नहीं, कोई वक्ता है तो लेखक नहीं, कोई लेखक है तो सदाचारी नहीं, कोई सदाचारी है तो कोई परोपकारी नहीं, कोई परोपकारी है तो कर्मठ नहीं, कोई कर्मठ है तो त्यागी नहीं, कोई त्यागी है तो देश भक्त नहीं, कोई देशभक्त है तो वेद भक्त नहीं, कोई वेद भक्त है तो उदार नहीं, कोई उदार है तो शुद्ध आहार नहीं, कोई शद्धाहारी है तो योद्धा नहीं, कोई योद्धा है तो सरल व दयालु नहीं, कोई सरल व दयालु है तो संयमी नहीं, परन्तु आप ये सभी गुण एक जगह देखना चाहें तो देव दयानन्द में देख सकते हैं। आचार्यों के आचार्य, परिब्राजक सम्राट, वेदविद्याधिपति, शास्त्र निष्णात सर्वतंत्र स्वतंत्र व्याकरण महोदधी, ब्राह्मण कुल कमल भास्कर, शास्त्रार्थ महारथी, दिग्गज, मेधावी, अद्भुत, अलौकिक, तार्किक, मुक्त आत्मा थे– जगद्गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती।

समारोह में उपस्थित श्रद्धालु नर-नारी- केसरी।

रविदास जयंती पर हुई काव्य गोष्ठी

विमल किशोर वन्देमातरम्
अमरोहा।

संत शिरोमणि रविदास के जन्म दिवस के अवसर पर वेदप्रचार मण्डल जनपद अमरोहा के तत्वावधान में काव्य गोष्ठी का आयोजन प्रचार कार्यालय, काली पगड़ी, अमरोहा में आयोजित किया गया। वैदिक ऋचाओं के सामूहिक गान से कार्यक्रम का प्रारम्भ किया गया।

इस अवसर पर हरिओम तोमर ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा- मिट गयीं तारीकियां सब जिन्दगी की राह से, ज्ञान का दीपक जहां में जब जलाया आपने।

गीतकार भुवनेश कुमार 'भुवन' ने अपने श्रद्धाभाव प्रस्तुत करते हुए कहा- हो गयी मीरा दीवानी भी प्रभु श्रीनाम की, ज्ञान के अमृत का प्याला जो पिलाया आपने।

प्रकाश प्रजापति ने संत के प्रति इन शब्दों से नमन किया- तजकर सभी कुपन्थ संत बन शरण वेद की आया था, जन-जन के प्रति श्रद्धा और वात्सल्य भाव जगाया था।

वीररस के कवि व कार्यक्रम के संचालक एड0 वंदेमातरम् ने अपने भावों से संत को नमन करते हुए कहा- संत श्री रविदास जी की वन्दना हम कर रहे हैं, पास जो कुछ है हमारे वह समर्पित कर रहे हैं, जो दिखाया आपने था, रास्ता माना कठिन था, पग बढ़ाने की उसी पर कोशिशें हम कर रहे हैं।

कार्यक्रम के अन्त में आयोजक/संरक्षक हरीशचन्द्र आर्य ने संत के सम्मान में कहा- ऊंच-नीच और भेदभाव को जग से दूर भगाया था। मानव-मानव एक बता समता का पाठ पढ़ाया था।।

अध्यक्षता कर रहे चमनलाल रवि ने कहा- उनकी अनुपम भक्ति की शक्ति सारे जग ने जानी थी। सीने में स्वर्ण जनेऊ था, कठौती में गंगा महारानी थी।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से चेतन गुप्ता, पुष्करलाल गुप्त, रामदास, कैलास त्यागी, गिरीश त्यागी, अवनीश बंसल, योगेन्द्र मोहन, राकेश वर्मा, मुकेश सक्सैना, तिलकराज चौहान, सुमित धवन आदि उपस्थित थे।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर यज्ञ

वैदिक ज्ञान वर्द्धिनी प्रतियोगिता में बांटे पुरस्कार

अमित आर्य
खेड़ा अफगान (सहारनपुर)

आर्य समाज खेड़ा अफगान, सहारनपुर में स्वामी श्रद्धानन्द दिवस का कार्यक्रम बड़े उत्साह और उल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर अनुज कुमार शास्त्री ने यज्ञ कराया। यज्ञ के यजमान वीरेन्द्र कुमार और उनकी धर्मपत्नी विजयलक्ष्मी गुप्ता रहे।

यज्ञोपरांत डॉ0 ओमप्रकाश वर्मा ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उनके बचपन का नाम मुंशीराम था। बरेली में स्वामी दयानन्द जी का ओ3म् की व्याख्या पर कई प्रवचन सुनने के उपरांत अपनी सभी बुराइयों का त्याग करके देश और धर्म के लिए कुछ करने की इच्छा से संन्यास लेकर स्वामी श्रद्धानन्द बन गये, और गुरुकुलीय शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए हरिद्वार के बीहड़ जंगलों में कांगड़ी नामक ग्राम में गुरुकुल की स्थापना की। पूर्व अपर जिलाधिकारी सत्यवीर आर्य ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द पहले संन्यासी थे, जिन्होंने दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर से वेदमंत्रों द्वारा अपना व्याख्यान आरम्भ कर, हिन्दू-मुस्लिम एकता का उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने स्वामी दयानन्द के अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए शुद्धि आन्दोलन को बड़े जोर-शोर से चलाकर बिछड़े भाइयों को गले लगाया।

आदित्य प्रकाश गुप्त ने नौवीं बार अपने आर्य समाज द्वारा करायी गयी वैदिक संस्कृति ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिता का आयोजन कराकर उसका परिणाम व पारितोषिक एवं वैदिक साहित्य सभी आगन्तुक अध्यापकों, विद्यार्थियों को प्रदान किया। इसी के साथ हर वर्ष की भांति छपने वाला कलैण्डर वितरित किया। इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार नकद रु0 २१00/- अरुण कुमार, द्वितीय पुरस्कार नकद रु0 1100/- रु0 राखी चौधरी व जसमीत कौर, तृतीय पुरस्कार नकद 500/-रु0 साहिबा अंसारी, गीता, अरशी, मानसी, शालू व तनु, चतुर्थ पुरस्कार आकाश, विश्वजीत, अंजलि, शिवानी, छोटनलाल को वितरित कर बच्चों का उत्साहवर्धन किया। इस प्रतियोगिता में निकट के लगभग दस इंटर कालेजों के छात्र एवं छात्राओं ने 500 की संख्या में भाग लिया। इस अवसर पर वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास की ओर से कम्बलों का वितरण किया गया।

प्रकाशवीर शास्त्री का जन्मदिन मनाया

अमरोहा (डॉ ब्रजेश)। वेद प्रचार मंडल, अमरोहा के तत्तावधान में प्रखर वक्ता व ओजपूर्ण भाषण के मर्मज्ञ पं0 प्रकाशवीर शास्त्री का जन्म दिन श्री प्रकाश वीर शास्त्री उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रहरा में मनाया गया। इस अवसर पर शास्त्री जी के पैत्रक गांव रहरा में स्थित उक्त विद्यालय में राष्ट्रभ्रत होम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए जन सेवा मिशन के सूत्रधार सुरेश नागर (पूर्व प्रधानाचार्य) ने अपने सम्बोधन में कहा कि श्रद्धेय प्रकाशवीर शास्त्री एक ऐसे प्रखर वक्ता थे कि संसद में इनके व मा0 अटल बिहारी वाजपेयी के भाषण सुनने के लिये एक लालसा जागृत रहती थी। कार्यक्रम में भजनोपदेश राकेश आर्य व एडवोकेट वन्देमातरम् ने किया।

इस अवसर पर कैलाश त्यागी, डॉ0 अशोक आर्य, यतीन्द्र विद्यालंकार, देवेन्द्र आर्य, रामपाल सिंह खडगवंशी, आदि उपस्थित थे। अध्यक्षता कर रहे शिवचरन ने सभी का आभार व्यक्त किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य आमोद त्यागी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। विद्यालय के छात्र–छात्राओं व अध्यापकों ने भी शास्त्री जी को श्रद्धा सुमन समर्पित किये।

आर्य समाज 'शहर' सोनीपत का 98वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

प्रवीण आर्य
सोनीपत।

''धर्म के वास्तविक स्वरूप को जानकर ही मनुष्य अपनी सब प्रकार की शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, सामाजिक उन्नति को प्राप्त होता है। आजकल के परिवेश में मनुष्य का आध्यात्मिक होना और भी आवश्यक है केवल इसी उपाय से ही जहां पर परिवार में सुखमय शांति का वातावरण बनता है वहां पूरा संसार कल्याणमय हो सकता है। आर्य समाज 'शहर' बड़ा बाजार सोनीपत के 98वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर चार दिवसीय कार्यक्रम में अजमेर के मूर्धन्य वैदिक विद्वान डॉ0 धर्मवीर ने मुण्डकोपनिषद की कथा के माध्यम से अपने सरल सारगर्भित प्रवचनों द्वारा जन सामान्य को ईश्वर के सच्चे स्वरूप से परिचित होकर शुद्ध उपासना का संदेश दिया। वैदिक सिद्धान्त मर्मज्ञ पं0 रामचन्द्र जी ने सच्चे ईश्वर पुत्र यानि आर्यश्रेष्ठ, गतिशील बनने की प्रेरणा के साथ–साथ अपने जीवन आहूत करने वाले आर्य बलिदानी, क्रान्तिकारी, ऋषिमिशन को आगे बढ़ाने वाले विद्वानों, आर्य संन्यासियों के प्रेरक स्मरण भी पुस्तुत किये। युवा विद्वान और चिकित्सक डॉ0 वरूण शर्मा ने अपने वक्तव्यों के माध्यम से अपने भोजन को सात्विकता की ओर मोड़ने तथा तामसिक आहार से ऊपर उठकर स्वयं को स्वस्थ बनाए रखने की प्रेरणा दी। फरीदाबाद से युवा आर्य भजनोपदेशक पं0 प्रदीप आर्य ने मनोहारी भजनोपदेशों, संगीतम प्रवचनों द्वारा परिवार, समाज, राष्ट्र को उन्नत बनाने का सुन्दर सन्देश दिया।

मंत्री प्रवीण आर्य ने मंच का कुशल संचालन किया। वैदिक सिद्धान्तों का अधिक सरलता से परिचय प्राप्त करने के उद्देश्य से वैदिक प्रश्नोत्तरी का आयोजन भी वार्षिकोत्सव का आकर्षण रहा। जिसका सम्पादन और संयोजक अति रोचक शैली में हुआ। इस पुनीत अवसर पर आर्य समाज 'शहर' बड़ा बाजार द्वारा अपने शताब्दी वर्ष 2016 के उपलक्ष्य में ग्रन्थमाला प्रकाश योजना के अन्तर्गत सुप्रसिद्ध वैदिक दार्शनिक विद्वान स्व0 पं0 गंगा प्रसाद उपाध्याय द्वारा रचित ग्रन्थ अद्वैतवाद का विमोचन भी हुआ और इसे जनसामान्य को समर्पित किया गया।

उपस्थित जनसमूह, जिज्ञासु महानुभावों, महिलावृन्द, युवाओं ने धर्मलाभ प्राप्त किया। आर्यसमाज के प्रधान सुभाष चांदना के धन्यवाद के पश्चात् 95वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ।

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज, वेद मन्दिर, डी0ए0वी0 इण्टर कॉलेज, आजमगढ़

प्रधान- रमेश चन्द्र अग्रवाल
उपप्रधान- अशोक कुमार अग्रवाल, विनोद कुमार, भानुप्रताप।
मंत्री- डॉ0 पीयूष कुमार
उपमंत्री- अरविन्द कुमार, नरेन्द्र कुमार एड0
कोषाध्यक्ष- राम समुझलाल।
पुस्त. अध्यक्ष- नवीन अस्थाना।

मनाया २४वां वार्षिकोत्सव

मुम्बई (दीपक रेलन)। आर्य समाज अन्धेरी का २४ वां वार्षिकोत्सव २१ कुण्डीय महायज्ञ २५ से २८ दिसम्बर २014 तक 12, आरामनगर-1, 7- बंगला अंधेरी में बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। वार्षिकोत्सव में वैदिक विद्वान डॉ0 वागीश शर्मा, प्रधानाचार्य आर्ष गुरुकुल, एटा, उ0प्र0 के प्रवचन व प्रभाकर शर्मा, मुम्बई ने सुमधुर भक्ति संगीत, व कन्या गुरुकुल चोटीपुरा, अमरोहा की ब्रह्मचारिणियों ने वेदपाठ किया।

मनुष्य को रखना चाहिए इन चार पर पूर्ण विश्वास

खुशहाल चन्द्र आर्य

जो मनुष्य अपने जीवन को सुखी व संतोषमय बनाना चाहता है उसको इन चार के उपर पूर्ण विश्वास रखना पड़ेगा, तभी वह सुखी व सन्तोषी बनकर रह सकता है। यदि कोई इनके ऊपर पूर्ण विश्वास न रखकर चलेगा, तो वह कभी सुखी व सन्तोषी नहीं बन सकता। वे चार हैं– 1. ईश्वर की न्याय व्यवस्था, 2. वेद–ज्ञान, 3. महर्षि दयानन्द के मन्तव्य, 4. आपकी आत्मा की आवाज।

1. **ईश्वर की न्याय व्यवस्था–** ईश्वर सब जीवों का निर्मात्रा अथवा पिता है, इसलिए सब जीव ईश्वर के पुत्र हैं। पिता अपने किसी पुत्र से भी अन्याय व पक्षपात नहीं करेगा। उसकी न्याय–व्यवस्था सब जीवों के लिये एक समान है। वह न किसी को अधिक देता है और न किसी को कम। मनुष्य को यह निश्चित समझ लेना चाहिये कि जैसा कर्म करूंगा उसका फल ईश्वर वैसा ही देगा। ईश्वर सर्व व्यापक है, सर्वशक्तिमान है और सर्वज्ञ है। इसलिए उसकी नज़र में कोई नहीं बच सकता। यानि जो जैसा करेगा, ईश्वर अपनी न्याय–व्यवस्था से वैसा ही फल निश्चित ही देगा। मनुष्य को भी ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिये। जब हमें पूर्ण विश्वास हो जायेगा कि यदि मैं कोई बुरा काम करूंगा तो ईश्वर उसका फल दुःख के रूप में देगा ही, तो हम बुरा काम करने से डरेंगे। यदि हमको ईश्वर की न्याय–व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास होता है, तो हमें दुःख सहने की शक्ति भी मिलती है, कारण हम यह सोचेंगे कि यह दुख जो मुझे मिल रहा है, यह मेरे किसी किये हुए बुरे कर्मों का ही फल है। ईश्वर मेरे उपर कोई अन्याय नहीं कर रहा है। जब ईश्वर के घर में अन्याय करना है ही नहीं तो वह मुझ पर अन्याय क्यों करेगा ? मुझे बिना बुरे कर्म किये दुःख क्यों देगा ? जब मुझे दुःख दिया है तो मैंने कभी बुरा काम किया है तो उसके परिणाम स्वरूप मुझे संतोष के साथ दुःख सहना चाहिये और आगे के लिए मैं अच्छे काम करूं ताकि मुझे दुख न मिले।

अब प्रश्न उठता है कि अच्छे और बुरे कर्म कौन–कौन से हैं। इसका उत्तर यही है कि ईश्वर जितने भी काम करता है, वह बिना स्वार्थ के जीव के हित व कल्याण के लिये ही करता है। सभी मनुष्य ईश्वर की सन्तान हैं, इसलिये उसे भी अपने पिता के समान ही काम करने चाहिए। जिन कामों से दूसरों का हित व प्रसन्नता प्राप्त होती हो, वे सभी काम अच्छे हैं जैसे दया, करूणा, परोपकार, स्नेह, प्रेम, सच्चाई, ईमानदारी, निष्पक्षता आदि। ये सब अच्छे कर्म हैं, हमसे दूसरों का भला होता है और इनकी आत्मा में प्रसन्नता होती है। महात्मा व्यास के शब्दों में '' आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरत्'' जो काम अपनी आत्मा को पसन्द हो, वही काम दूसरों से भी करें। महात्मा तुलसीदास के शब्दों में ''परहित सरिस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई''। गीता के शब्दों में अवश्यमेव मोकृव्य कृतकर्म शुभा शुभम्'' किये हुए कर्मो का फल अवश्य मिलता है। सो यही समझकर हमें अच्छे कर्म करने चाहिए ताकि हमें दुःख न मिले। इसके विपरित द्वेष, ईर्ष्या, छल, कपट, पक्षपात, हिंसा आदि बुरे कर्म हैं, इनसे दूसरों को कष्ट होता है, इसलिए ये कर्म न करें।

2. **वेदों पर पूर्ण विश्वास रखें –**हम उपर लिख चुके हैं कि ईश्वर सभी जीवों को पैदा करने वाला है इसलिये ईश्वर सब का पिता हुआ और सभी जीव ईश्वर के पुत्र हुए। जब हम संसारिक पिता पर ही इतना विश्वास करते हैं कि वह हमारा कभी भी अशुभ चिन्तक नहीं हो सकता। तो हमें परम् पिता परमात्मा पर तो जरूर ही पूर्ण विश्वास रखना चाहिए कि ईश्वर हम पर कभी भी अन्याय नहीं कर सकता। ईश्वर ने वेद ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में इसीलिए दिया था कि मनुष्य अपने जीवन में किस प्रकार रहे जिससे वह अपने व दूसरे के जीवन को सुखी व आनन्दित बना सके। वेद ईश्वर की संविधान की पुस्तक है जो मनुष्यों को जीने की कला सिखाता है। जिस प्रकार संविधान से राष्ट्र चलता है उसी प्रकार यदि मनुष्य चले तो वह अपने जीवन को पूर्ण सुखी व शान्तिमय बनाकर मोक्ष प्राप्ति की ओर अग्रसर हो सकता है जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है और यह मनुष्य योनि में ही सम्भव हैं इसलिये जीव को पहले अपने शुभ कर्मों से मनुष्य की योनी में आना पड़ेगा। फिर अपने जीवन को वेदानुकूल बनाने से वह मोक्ष पाने का अधिकरी बन सकेगा। मोक्ष प्राप्ति का अन्य कोई मार्ग नहीं। जब हमें ईश्वर पर पूर्ण विश्वास है तो हमें उसके बजाए वेदों पर भी पूर्ण विश्वास रखना चाहिए।

3. **महर्षि दयानन्द के मन्तव्य–** जो व्यक्ति केवल परोपकार की भावना से ही काम करता है, जिसको अपना कोई स्वार्थ नहीं होता, ऐसा व्यक्ति जो कुछ कहेगा या लिखेगा, वह सब मनुष्य मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र के लिए लाभदायक व कल्याणकारी होगा। उसके कहे व लिखे पर बिना किसी सन्देह व शंका किये मान लेना चाहिए और उसके अनुसार चलना चाहिए। महर्षि दयानन्द एक ऐसे ही महामानव थे, जीवन भर परोपकार के लिए जीये और परोपकार के लिये ही मरे। वे 18 घण्टों की समाधि के अभ्यस्थ हो चुके थे जो उनकी मोक्ष प्राप्ति के लिए पर्याप्त था। यानि महर्षि अपनी 18 घण्टों की समाधि से ही मोक्ष प्राप्त कर सकते थे। परन्तु स्वामी जी केवल स्वयं ही मोक्ष में नहीं जाना चाहते। वे चाहते थे कि सब मनुष्य मोक्ष को प्राप्त करें। मोक्ष प्राप्ति के लिये वेदानुकूल चलना बहुत जरूरी है। इसीलिए महर्षि ने वेदों का ज्ञान जानने की विधि अपने सदगुरू स्वामी विरजानन्द की गोद में लगभग तीन साल बैठकर सीखी, फिर वेदों का तथा वेदों सम्बन्धी सभी ग्रन्थों का अध्ययन किया, व ज्ञान की श्रेष्ठता जानने के लिए इनके विपरित ग्रन्थों का भी स्वाध्याय किया। जब यह जान लिया कि वेदानुकूल चलने से ही मानव मात्र अपने जीवन के प्रति व महान् बनकर जीवन का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है तब स्वामी जी ने अपने पूरे जीवन में वेदों का प्रचार व प्रसार किया और लोगों को वेद– मार्ग को अपनाने का आग्रह किया। जिससे वे भी अपने जीवन को स्वच्छ व पवित्र बनाकर मोक्ष को प्राप्त कर सकें। स्वामी जी ने वेदों का केवल प्रचार ही नहीं किया बल्कि अनेकों ग्रन्थ भी लिखे इसलिए हर व्यक्ति को ऐसे उपकारी व्यक्ति के लिखे ग्रन्थों को पढ़ना चाहिए और उसके लिखे पर पूर्ण विश्वास करके तथा उसके अनुसार चलकर अपने जीवन को तथा अन्यों के जीवन को सुखी व पवित्र बनाना चाहिए।

4. **अपनी आत्मा की आवाज पर विश्वास रखना –**महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' में लिखा है कि मनुष्य की आत्मा सत्य व असत्य को जानने वाली होती है। इसीलिए जब मनुष्य कोई बुरा काम करने की सोचता है या करने के लिए उद्यत होता है तब उसकी आत्मा उस काम को न करने को कहती है और उसके मन में भय, लज्जा व शंका उत्पन्न कर देती है। ताकि वह उस काम को न करे। परन्तु वह अपने हठ दुराग्रह, अज्ञान व विवशता के कारण कर लेता है। तब भी इसको कई बार न करने को कहती है। जब वह अभ्यस्थ हो जाता है तब आत्मा की आवाज आनी बन्द हो जाती है। इसी प्रकार जब मनुष्य कोई अच्छा काम करने की सोचता है या करने के लिए तैयार होता है, तब भी आत्मा उसको वह काम करने के लिए उत्साहित व प्रेरित करती है और उसके मन में उत्साह, आनन्द व प्रसन्नता की अनुभूति कराती है। ताकि वह उस अच्छे काम को जरूर–जरूर करे। महर्षि दयानन्द के अनुसार यह आत्मा की आवाज ईश्वर की तरफ से होती है। इसलिए मनुष्य को अपनी आत्मा की आवाज के अनुसार उसके ऊपर पूर्ण विश्वास रख कर वह कार्य जरूर–जरूर करना चाहिए। ताकि वह बुराईयों से बच सके और अच्छाईयों को अपना सके जिससे वह अपने जीवन को सुधार कर उन्नति की ऊचाईयों को आसानी से छू सकें।

द्वारा–गोबिन्द राम
आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला) कोलकत्ता–700007
मो0नं0–9830135794

कर्म की महत्ता

सीए मदन वर्मा

लम्बा जीवन जीने से गहरे जीवन में जीना सीखें। बड़ी आयु होने पर भी यदि कुछ नहीं सीखा, तो यहां आने का क्या अर्थ? हम संसार में सीखने आये हैं, आगे बढ़ने आये हैं, उन्नति करने आये हैं, और उन्नति करके भव सागर से पार होने आये हैं। हम यहां फंसने नहीं, मुक्त होने आये हैं।

ब्रह्म, जीव, प्रकृति, काल व कर्म- शास्त्रों में ये पांच वस्तुएं अनादि अर्थात् नित्य मानी गयी हैं। इसलिए यह सृष्टि भी अनादि है। जैसे सूर्य के तेज से सागर का जल बादल बनकर वर्षा करता है, और वह जल नदी के रूप में परिवर्तित होकर सागर में जा मिलता है, और यह क्रम जारी रहता है। इसी प्रकार जीव माया-बन्धन से मुक्त हुआ, अपने कर्मों के अनुसार बार-बार भिन्न-भिन्न योनियों में जन्म लेता है। और ऐसे ये सृष्टि-क्रम चलता रहता है। कुछ कर्म ऐसे हैं, जिनका फल मनुष्य को तत्काल मिलता है। जैसे आटा गूंथकर रोटी बनाना और उससे अपनी भूख मिटाना। कुछ कर्मों का फल थोड़ी देर से मिलता है, जैसे- परीक्षा के लिए परिश्रम करना और फलस्वरूप इसमें सफल होना। कुछ कर्म ऐसे हैं, जो प्रारब्ध बन जाते हैं। कुछ ऐसे कर्म हैं, जो संचित होते हैं। जब अपने कर्मानुसार जीव को फिर मनुष्य जन्म मिलता है, तो संचित कर्मों में से कुछ कर्म मनुष्य के भोग के लिए प्रदान होते हैं। संचित कर्म के अनुसार जीव न चाहता हुआ भी अपनी आदत के अनुसार बुरे कर्म कर बैठता है। इससे बचने का उपाय है कि सच्चे मन से प्रभु से रोज प्रार्थना करें कि हे दीन बुन्धु, मुझको इस बुरी आदत से छुटकारा दिलाओ, तो वह करुणा सागर उसकी यह प्रार्थना सुन लेते हैं। इससे जीव को इन संचित कर्मों से छुटकारा मिल जाता है।

वैसे गीता में भगवान ने कर्म-बन्धन से छुटकारा पाने के लिए कहा है- ''हे अर्जुन! तू ध्यानानिष्ठ चित्त से सम्पूर्ण कर्मों को मुझ में समर्पण करके, आशा रहित और ममता रहित होकर, और संताप रहित होकर युद्ध कर। और हे अर्जुन! जो कोई भी मनुष्य दोष बुद्धि से रहित और श्रद्धा से युक्त हुए सदा ही मेरे इस मत के अनुसार वर्तते हैं, वे पुरुष सम्पूर्ण कर्मों से छूट जाते हैं।''

अस्येदु मातुः सवनेषु सद्यो महः पितु पपिवाञ्चार्वन्ना।
मुसायद्विष्णु पचतं सहीयान्विध्यद्वराहं तिरो आद्रिमस्ता।।

(ऋग्वेद 1.61.7)

प्रस्तुत वेदमंत्र में प्रभु प्रकाश प्राप्ति हेतु तेजस्विता रक्षक सोम रक्षण की प्रेरणा दी गयी है। सात्विक अन्नों से शरीर में सप्तधातुओं का निर्माण होता है। अंतिम धातु वीर्य परिपक्व धातु होती है। शरीर में ही सुरक्षित यह सोम ज्ञानाग्नि का ईंधन बनता है। इससे मनुष्य त्रिविक्रम- शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक रूप से उत्तम होता है। वह अध्यात्म ज्ञान से अविद्या को दूर कर वासनाओं को विनष्ट करता है। यह दीप्त ज्ञानाग्नि ही उसे प्रभुदर्शन के योग्य बनाती है। हम सोम को सुरक्षित कर वासनाओं को नष्ट करें, और अविद्या के पर्वत को उखाड़ फेंकें।

निर्धनता उतनी बुरी नहीं, जितनी विचारों की निर्धनता।

हिन्दी बनाम इंग्लिश माध्यम

शिवअवतार सरस

उद्‌घोषक (पृष्ठभूमि) :
था विवाद 'हिन्दी' 'इंग्लिश' में बड़ी कौन है छोटी कौन।
पराधीन भारत में 'इंग्लिश फैल रही थी, रहकर मौन।।
मगर आज स्वाधीन देश में, 'इंग्लिश फिर से हुई मुखर।
इस माध्यम से पढ़कर बच्चे छोड़ रहे अब अपना घर।।
हिन्दी :
सदा-सदा से जन-भाषा थी, छीन लिया मुझसे नरिवास।
राजमहिषि बन बैठी इंग्लिश, मुझको मिला हास/बनवास।।
आजादी से पूर्व देश में, फैला था मेरा वर्चस।
अब इंग्लिश को बना बहाना, लूट लिया मेरा सर्वस।।
अंग्रेजी :
मैं हूं विश्वव्यापी भाषा, दूर-दूर तक है विस्तार।
अखिल विश्व में फैली हूं मैं, सब भाषाओं पर अधिकार।।
ट्रेड, ज्ञान विज्ञान क्षेत्र, सर्वत्र मची है मेरी धूम।
सर्वेक्षण में सबसे आगे, जब चाहो तब देखो घूम।।
हिन्दी :
पर, इंग्लिश माध्यम के बच्चे, माता-पिता को जाते छोड़।
भौतिकवादी इस कुचक्र से काट रहे संस्कृति की डोर।।
करें न चिन्ता राष्ट्रधर्म की, छोड़ देश जाते परदेश।
इधर पलायन है प्रतिभा का, उधर आ रहा बाह्य निवेश।।
अंग्रेजी :
इंग्लिश के ही कारण जग में, आज वैश्वीकरण हुआ।
दूर-संचरण, कम्प्यूटर के, कारण देते मुझे दुआ।।
'यूरो'-'अमरीका' में देखो गूंजा भारत का गौरव।
लाखों-लाख कमा भारतीय, बढ़ा रहे अपना वैभव।।
हिन्दी :
कागज की नौका से जैसे, सागर पार नहीं होता।
वैसे ही कागज की मुद्रा से उद्धार नहीं होता।।
सच है इच्छाएं अनन्त हैं, और सभी का साधन 'धन'।
मगर राष्ट्र-रक्षा-हित में निज 'भाषा' ही होवे साधन।।
समीक्षक (उपसंहार) :
शिक्षा के दो उत्तम माध्यम, 'हिन्दी', 'इंग्लिश' भाषाएं।
इन दोनों पर टिकीं भारतीय युवकों की सब आशाएं।।
नौनिहाल सारे भारत के अपनाकर दोनों माध्यम।
करें उपार्जन धन का, लेकिन, कभी न भूलें देश-धरम।।
-मालतीनगर, मुरादाबाद
0945603२671

अथर्ववेद वाणी
जल प्रदूषण रोकिए

वीरेन्द्र कुमार राजपूत

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे ।।1.5.1।।
: गीत :
जलों! अति सुखदायी हैं आप।
भलीभांति अतुलित पुष्टि से , हमको दीजै ढाप।।
आप कीजिए पुष्ट हमें, जिससे हम बलशाली हों,
जिसमें हों रमणीय अत्यधिक, चेहरे पर लाली हो;
प्रभु-दर्शन कर सकें, आप वह हम पर छोड़ो छाप।।

या बद्ध शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।
उशतीरिव मातरः ।।1.5.२।।
: गीत :
जलों! कल्याणी रस की खान।
भागीदार करो हमको भी, रहते इसी जहान।।
अपने बालक से स्नेह करने वाली माता,
उसको दूध पिलाती अपना, होती पुष्टि प्रदाता;
वैसे ही निज रस का हमको, करवाएं रसपान।।
-सौरभ सदन, 8-बसन्त कुंज,
369/1 वसन्त बिहार, फेज-1, देहरादून।

बसन्त

कान्ति बल्लभ जोशी "सदगुरू"

"प्रकृति" की अनगिनत सौगात लिए।
"ऋतु बसन्त" आया हमारे द्वार।
उधर बहुरंगी बसन्त की फुहार।।
इधर बदरंगी चुनावों का बुखार।
ये संयोग पूरे राज्य में इस बार।
राजकाज का भी हुआ बिस्तार।।
राजा के सिर पर "कांटों का ताज"।
राज्य का फिर से बिगड़ा मिजाज।।
सजी सजाई तरंग की बाजी।
"महाराज" हार गये फिर से आज।
जीती बाजी हार के "मैडम" भई उदास।
पहलवान फिर मजबूर हैं करने को मसाज।
भ्रष्टाचार की लड़ाई में आज मची है होड़।
पहले "आप" की तर्ज से कैसे मिटे ये कोढ़।।
अनगिनत कोरे वादों के मंच सजने लगे हैं।
फूहड़ और उदास संगीतों के सुर बजने लगे हैं।।
कहने को ये पंचायती राज है।
हर झुण्ड से निकलता एक "बाज" है।।
पत्नी को चुनाव लड़ाने पति हुए बेताब।
बेमन से नेतागिरि का पूरे करो उनके ख्वाब।।
"पप्पू" भी अब नेताओं के लगा रहा है चक्कर।
चिन्ता उसकी सता रही है गुड़ खायें या शक्कर।।
कहैं "सद्‌गुरू" राजनीति में सियार और शेर पहचानो।
जिसने खो दिया स्वाभिमान वही शेर है जानों।।
चन्द कलोनी, स्टेशन रोड, टनकपुर

बसंत का अहसास

भवीस डी. सावरगांवकर

बसंत का कुछ रंग अलग है
बसंत का कुछ ढंग अलग है
बसंत की कुछ चाहत अलग है
बसंत की कुछ बात अलग है।
यारों का यार है बसंत
प्यारों का प्यार है बसंत
दिलदारों का दिलदार है बसंत
सभी का दुलारा है बसंत
सभी बसंत को चाहते हैं
सब की जान है बसंत
सब की चाह है बसंत
चुप धीरे से दिल में उतर जाता है बसंत
और अपनी छाप छोड़ जाता है बसंत
प्यार करने वालों को प्यार करता है बसंत
कभी न खत्म होने वाली बात है बसंत
बसंत अपनों से अलख जगाता है
फिर एक वर्ष के लिए विदा हो जाता है बसंत
सिल्वर स्टेट, म. नं.33,34,35
अम्बिकापुर वार्ड क्र. 13, गली नं. 3, सरगुजा (छ.ग.)

ग़ज़ल

डॉ0 उर्मिलेश शंखधार

अब न लहरें हैं, न मछलियां हैं अब
हर तरफ सूखी नदियां हैं अब
वो जो गजलें हमें सुनाता था
उसके होठों पे गालियां हैं अब
अब तो ईश्वर ही अपना मालिक है
बूढ़े हाथों में कश्तियां हैं अब
अपने मालिक को भूल जाती है
कितनी कमजर्फ कुर्सियां हैं अब
पूरा अखबार कौन पढ़ता है
सबकी नजरों में सुर्खियां हैं अब
एक धृतराष्ट्र को तो सह लेते
सबकी आंखों पे पट्टियां हैं अब
अब भला कैसे आग पकड़ेगी
सब की सब सीली तीलियां हैं अब

देवनारायण भारद्वाज की दो कविताएं

मंत्रगीत
रुचि रंजन

सब दूर कुरुचि के क्रन्दन हों।
हे ईश मुझे रुचि रंजन दो।।
रुचि प्रभा प्रीति प्रतिमान आप।
मुझको कर दो श्रुतिमान आप
स्वयं चमकते चमकाते भी,
करते प्रकाश गतिमान आप।
नन्दन वन के तुम चन्दन हो।
हे ईश मुझे रुचि रंजन दो।।
हे ईश दीप्त हो रहे आप।
यह दीप्त कर रहे जगत आप।
मैं दीप्त बनूं जग दीप्त करूं,
दो मुझ को यह उत्थान आप।
अभिनन्दन के तुम गुंजन हो।
हे ईश मुझे रुचि रंजन दो।।
पाशविक सजाते देह आप।
मानसिक आत्मिक गेह आप।
हो जाए प्रकाशित बाह्यान्तर,
दो मुझे यही प्रभु नेह आप।
हर गुंजन में प्रभु कुंजन हो।
हे ईश मुझे रुचि रंजन दो।।

शुद्धताई

शुद्धताई शुभ शुद्धताई।
प्रभु प्रभा दर्शी शुद्धताई।।

तल स्वच्छ रहे तन स्वच्छ रहे।
मन मेधा जिसकी स्वच्छ रहे।
हर कहीं प्रभा आभा होगी,
परिवेश वेश सब स्वच्छ रहे।

सौंदर्य शाश्वत शुद्धताई।
प्रभु प्रभा दर्शी शुद्धताई।।

स्वयमेव शुद्ध सर्वेश्वर हैं।
स्वयमेव प्रभा परमेश्वर हैं।
शुभ शुद्ध हृदय में झलकाते,
अनुभूति स्वयं हृदयेश्वर हैं।

ओजदायी है शुद्धताई।
प्रभु प्रभा दर्शी शुद्धताई।।

हों स्वच्छ शुद्ध आयाम जहां।
निष्कलुष कला के काम जहां।
हर ध्यानी का ध्यान वहीं रमता,
हों सुखद श्रेय परिणाम वहां।

श्रुति ने सिखाई शुद्धताई।
प्रभु प्रभा दर्शी शुद्धताई।।

स्रोत : शुक्राऽसि भ्राजोऽसि। स यथा त्वं भ्राजता भ्राजो ऽस्ये वाहं भ्राजता भ्राज्यसम्।।
(अथर्व0 17.1.२0)
-'वरेण्यं अवन्तिका (प्र0)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़।

जल ही जीवन है,
इसे व्यर्थ न बहाएँ

स्वाध्याय क्यों करें?

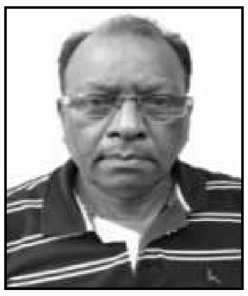

मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य जीवन का उद्देश्य शारीरिक उन्नति कर बौद्धिक व आत्मिक उन्नति करना है। शारीरिक उन्नति तो अच्छे भोजन व व्यायाम आदि से हो जाती है परन्तु बौद्धिक उन्नति के लिए अच्छे संस्कारों सहित ज्ञान, परा व अपरा विद्या, की आवश्यकता होती है। संस्कार माता–पिता, आचार्यों आदि से मिलते हैं तथा ज्ञान की प्राप्ति माता–पिता व आचार्यों सहित अपने जीवन में स्वाध्याय के द्वारा होती है। आजकल हमारे देश में स्कूलों में जो शिक्षा दी जाती है उसमें संस्कारों को नाम–मात्र का ध्यान दिया जाता है। अध्यापकों द्वारा बच्चों को पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन कराया जाता हैं जिससे एकांगी ज्ञान प्राप्त होता है। इसमें आध्यात्मिक व सामाजिक ज्ञान तो प्रायः होता ही नहीं है। इसकी पूर्ति किसी ऐसी धार्मिक सामाजिक संस्था से जुड़कर हो सकती है जहां केवल तर्करहित परम्परागत ज्ञान ही न देकर उस परम्परागत ज्ञान की आधुनिक ज्ञान व विज्ञान से तुलना कर तर्क, बुद्धि व युक्ति पर सत्य सिद्ध होने वाली मान्यताओं व सिद्धान्तों का ज्ञान कराया जाता है। क्या ऐसी संस्थायें हम लोग जान सकते हैं या वहां पहुंच सकते हैं? यह एक कठिन प्रश्न है। यद्यपि आर्य समाज में सत्य मान्याओं व सिद्धान्तों का प्रचार किया जाता है परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि जिस समाज से कोई व्यक्ति जुड़ रहा है वहां के संचालकगण किस प्रकार के हैं। वहां सत्य ज्ञान के प्रचार की समुचित व्यवस्था है या नहीं? आर्य समाज का सदस्य बनना बहुत अच्छी बात है परन्तु सावधानी से यह देखना चाहिये कि यदि वहां अभिलषित ज्ञान में कुछ बाधा है तो फिर वहां किसी स्वाध्यायशील व ज्ञानी व्यक्ति से सम्पर्क कर ईश्वर, जीवात्मा व उपासना आदि के ग्रन्थों का पता कर उसे प्रकाशकों से मंगा कर घर में बैठ कर सुविधानुसार पढ़ना चाहिये और उन सिद्धान्तों पर मनन करना चाहिये। इन विषयों के अनेक ग्रन्थ हैं जो किसी एक ही प्रकाशक से आसानी से पत्र, इमेल या फोन शुल्क देकर मंगाये जा सकते हैं।

वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय से हमें अपने अस्तित्व व सत्ता का यथार्थ ज्ञान होता है। हमारे अतिरिक्त संसार में जो सृष्टि की रचना–पालन व संहार करने वाली सत्ता ''ईश्वर'' है उसका भी तर्क, युक्ति व प्राचीन ऋषि परम्परा से चला आ रहा सत्य ज्ञान प्राप्त होता है। यदि जीवात्मा, ईश्वर का ज्ञान होने के साथ उपासना की सही पद्धति का ज्ञान भी हो जाये और हम उसे अपने जीवन में महत्व दें तो हमारी आत्मिक व सामाजिक उन्नति का होना सुनिश्चित हो जाता है। अतः इन विषयों के ग्रन्थों का अध्ययन करना प्रत्येक मनुष्य के लिए नितान्त आवश्यक है। इस श्रेणी के कुछ ग्रन्थों के नाम हैं, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, 11 उपनिषद, 6 दर्शन,, चार वेद, स्वामी दयानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन चरित्र आदि। इन ग्रन्थों को पढ़ने से अनेकानेक विषयों का ज्ञान होगा और वह ज्ञान ऐसा है कि जो और कहीं उपलब्ध नहीं है। स्कूली पुस्तकों व व्यवसायिक पत्र–पत्रिकाओं में तो कुछ इच्छित सामग्री के मिलने का प्रश्न ही नहीं है। यह ऐसा ज्ञान है जिसे जानने के बाद हम अपने जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य को जान व पहचान सकते हैं और उस पर सभी प्रकार से विचार कर उसकी सत्यता की पुष्टि होने पर उसे स्वीकार व अस्वीकार कर सकते हैं। स्वाध्याय करते हुए यह बात महत्वपूर्ण हैं कि हमने जो पढ़ा–लिखा हुआ है उसका दुष्प्रभाव हमारे वर्तमान अध्ययन के विषयों पर न पड़े। होता यह है कि हमने अनेक विषयों का विपरीत प्रकार का साहित्य या विचार सुने व पढ़े हुए होते हैं। जब हम उनके विपरीत कोई उचित व सत्य बात पढ़ते हैं तो हमारे पुराने संस्कार उसमें बाधक हो जाते हैं और हमें वह सत्य विचार, मान्यतायें व सिद्धान्त एक दम स्वीकार नहीं होते हैं। इस कारण कई अध्येता उन बातों की सम्यक पड़ताल न कर उनके विरोधी हो जाते हैं और अपना अध्ययन बन्द कर देते हैं। इससे अध्ययनकर्त्ता को हानि होती है। जब भी हम किसी विषय का अध्ययन करें तो यह अति आवश्यक है कि हम अपने पूर्व के विचारों को उस अध्ययन में बाधक न बनने दें। जब कहीं ऐसी स्थिति बने तो नये विचारों को और गहराई से अध्ययन करें। अपने पूर्व निश्चित विचारों की भी अच्छी तरह से पड़ताल करें। किसी विषय के विशेषज्ञ विद्वान की सहायता भी ले सकते हैं। ऐसा करके सत्य को प्राप्त करने का प्रयत्न करें। आजकल सर्वत्र ऐसा देखने में आ रहा है कि लोगों के कई विषयों में सत्य के विपरीत विचार हैं परन्तु उन्हें उनका ज्ञान ही नहीं हो पाता। वह अज्ञानतावश या स्वार्थ से प्रेरित होकर सत्य का विरोध करते हैं। ऐसा सभी मतों व सम्प्रदायों में हो रहा जो कि सामाजिक एकता व सुख शान्ति में बाधा पहुंचाता है और इससे मनुष्य की व्यक्तिगत हानि भी होती है।

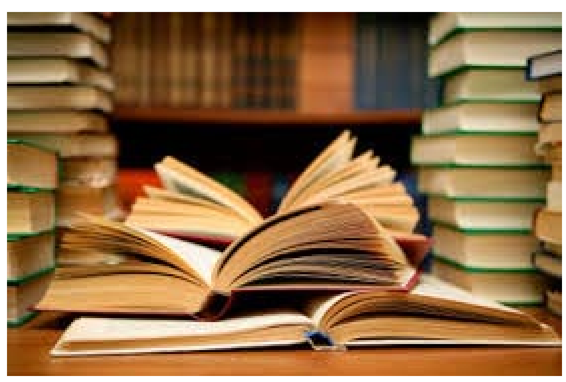

स्वाध्याय की बात चल रही है तो वेद की चर्चा करना भी सार्थक है। वेद ज्ञान की पुस्तकें हैं और इतिहास की दृष्टि से यह संसार की सभी पुस्तकों से प्रथम, प्राचीनतम् व आदि ज्ञान है। वेदों का जो ज्ञान है उसकी श्रेष्ठता की तुलना में संसार में कोई अन्य ग्रन्थ नहीं है। यह ऐसा ग्रन्थ है जिसमें ईश्वर, जीवात्मा तथा प्रकृति के बारे में सत्य व यथार्थ ज्ञान है जबकि पिछले 5,000 वर्षों में महर्षि दयानन्द व उनके अनुयायियों के लिखे ग्रन्थों के अतिरिक्त अध्यात्म या समाजिक विषयों पर जो ग्रन्थ उपलब्ध हैं, उनमें पूर्ण सत्य व यथार्थ ज्ञान नहीं पाया जाता। यही कारण है कि वेद आज भी सबसे अधिक प्रासंगिक, उपयोगी, उपादेय व अपरिहार्य हैं। वेदों की भाषा भी किसी चमत्कार से कम नहीं है। इसकी शब्द रचना और व्याकरण संसार की भाषाओं में सर्वोत्तम है। वेदों के शब्द धातुज या यौगिक हैं जबकि यह गुण संसार की अन्य किसी भाषा में नहीं है। यह ज्ञान संसार में कहां से आया, कौन इसका लेखक है, इन प्रश्नों पर विचार करने पर यह तथ्य सामने आता है कि प्राचीनता की दृष्टि से सबसे प्राचीन होने के कारण यह ज्ञान मनुष्य वा मनुष्यों की रचना नहीं है। मनुष्यों में यह सामर्थ्य नहीं है कि वह प्रथम भाषा का निर्माण या रचना कर सकें। बच्चा जब पैदा होता है तो उसके शरीर में बोलने के सभी साधन व यन्त्र होते हैं परन्तु उसे भाषा माता–पिता, आचार्यों व अन्य मनुष्यों से सीखनी पड़ती है। यदि यह लोग उसके साथ बात–चीत न करें तो बच्चा कभी भी बोलना नहीं सीख सकता। बच्चा व बाद में युवक या प्रौढ़ व्यक्ति जो भी ज्ञान रखता है, वह उसने दूसरों से सीखा होता है। इसी कारण से पुस्तकों का महत्व है कि जो ज्ञान कहीं से न मिले तो वह पुस्तक से मिल जाता है। प्राचीन काल में जब ईश्वर ने अमैथुनी सृष्टि में मनुष्यों को बनाया तो युवावस्था में बनाने पर भी उनको बोलना सिखाने के साथ जीवनयापन करने हेतु समस्त प्रकार का ज्ञान दिये जाने की आवश्यकता थी। प्राचीन आरम्भिक मनुष्य बोलना ही जानते थे तो वह भाषा व ज्ञान को उत्पन्न कैसे करते? ज्ञान भाषा में निहित होता है। बिना भाषा से मनुष्य सोच नहीं सकता। चिन्तन व मनन के लिए किसी न किसी भाषा की आवश्यकता होती है। एक भाषा के उपलब्ध होने पर कुछ नकल कर व उसमें विकार उत्पन्न कर नई भाषा अस्तित्व में आ सकती है व समय के साथ स्वमेव आ जाती है परन्तु प्रथम भाषा तो केवल सर्वज्ञ व सर्वान्तर्यामी चेतन ईश्वर से ही प्राप्त होती है। वैदिक संस्कृत भाषा ईश्वर से ही प्राप्त हुई संसार की प्रथम भाषा है। वेद भी ईश्वर से प्राप्त वह ज्ञान है जो सृष्टि रचना के बाद अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न प्रथम चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा की अन्तरात्माओं में ईश्वरीय प्रेरणा से अर्थ सहित प्रदान किया गया था। इन चार ऋषियों ने अध्यापन व उपदेश आदि के द्वारा इसे अन्य मनुष्यों के द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया। सृष्टि का आदि ज्ञान 'चार वेद' और इनकी भाषा 'वैदिक संस्कृत' भी परमात्मा द्वारा रचित व सारी सृष्टि के हमारे प्रथम पीढ़ी के पूर्वजों को प्रदान किये जाने से संसार के प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपनी इस सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करे और अपना सर्वोपरि कर्तव्य मानकर इस भाषा को सीखे और वेदों के ज्ञान की परीक्षा कर इसकी अन्य सभी धार्मिक पुस्तकों से तुलना करें तथा सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करे। यह सब कार्य स्वाध्याय, अध्ययन, विचार, चिन्तन व मनन के द्वारा मनुष्यों को करने हैं जो परस्पर पूरक होने से इन्हें स्वाध्याय के अन्तर्गत परिगणित कर सकते हैं।

प्राचीन काल में हमारे समस्त ऋषि–मुनि, मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम, योगेश्वर कृष्ण, अद्वितीय वीर हनुमान, महामति चाणक्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती आदि ने जो यश व कीर्ति अर्जित की, उसका कारण वैदिक ज्ञान व उनका स्वाध्याय ही था। वैदिक साहित्य के अध्ययन व इनका स्वाध्याय कर हम पुनः अपने विख्यात व कीर्ति वाले पूर्वजों के समान उत्तम संस्कारों वाले मनुष्यों को उत्पन्न कर सकते हैं। हम समझते हैं कि यदि हम अपने जीवन में भली प्रकार से समय का विभाजन करें तो हम स्वाध्याय के लिए पर्याप्त समय निकाल सकते हैं। 1 घंटा प्रतिदिन वैदिक साहित्य के स्वाध्याय को देना कठिन कार्य नहीं है। यदि कोई मनुष्य यह व्रत या संकल्प लेकर स्वाध्याय आरम्भ करता है तो हम समझते हैं कि एक–दो वर्ष में ही वह अधिकांश वैदिक साहित्य का अध्ययन कर सकता है। इसका कारण हमारी यह गणना है कि मनुष्य एक घंटे में लगभग 15 पृष्ठ पढ़ता है। एक वर्ष में वह 5475 पृष्ठ हो जाते हैं। इस प्रकार से इन पृष्ठों में सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय, 11 उपनिषद, 6 दर्शन व वेदों का अधिकांश भाग पढ़ा जा सकता है। यदि भविष्य में देश में समस्त वैदिक साहित्य का अध्ययन अनिवार्य विषय हो जायें तो हमें लगता है कि इससे वह काल वैदिक काल के समान स्वर्णिम काल बन जायेगा जहां न कोई अन्धविश्वास, न पाखण्ड, न कुरीतियां, न मिथ्या पूजा, न फलित ज्योतिष और न असमानता, विषमता, जन्मना जातिवाद या छुआछूत जैसी बातें होंगीं। एक मत, एक विचार, एक भाषा, एक भाव की स्थिति होगी। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए सर्वसम्मति के आधार पर व्यापक स्तर पर प्रयास होने चाहिये जिसमें किसी भी स्तर पर राजनैतिक हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये। यह महान लक्ष्य स्वाध्याय, अध्ययन–अध्यापन, उपदेश, वार्ता व सत्य व असत्य का विचार व शास्त्रार्थ आदि से प्राप्त किया जा सकता है। आईये, हम नित्य प्रति अधिक से अधिक स्वाध्याय का व्रत लें और मनुष्य के परम धर्म वेदों का पढ़ना–पढ़ाना व सुनना–सुनाना को अपने व दूसरों के जीवन में चरितार्थ कर भौतिक समृद्धि के साथ धर्म–अर्थ–काम व मोक्ष के पथिक बनें।

पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः 09412985121

स्वामी विदेह द्वारा यज्ञ, योग व वेद प्रचार

अगरतला (त्रिपुरा) सिद्धार्थ मेहता। **ओइम** साधना मंडल के संस्थापक स्वामी दयानन्द विदेह ने अगरतल्ला, घरमानगर, जलावासा आदि क्षेत्रों में यज्ञ, योग व वेद प्रचार किया। स्वामी जी ने अपने प्रवचनों के माध्यम से शिक्षा, संस्कार व अष्टांग योग के विषय में बताया। कार्यक्रम में विनय भूषण दास, विधन दास, नारायण दास, नागेश मेहता व राजेन्द्र जी सहयोगी रहे।

आखिर कब बन्द होगी गौ तस्करी

आगरा। 18 जनवरी को बाह रोड पर एक ट्रक गौ मांस से भरा पकड़ा गया। इस ट्रक में कुछ जिंदा गायें भी थीं जिन्हें स्थानीय लोगों की मदद से आजाद कराया गया। कुछ लोग भागने में सफल रहे तो कुछ को पकड़ लिया गया। इस घटना से समाज में कोई हलचल नहीं है। जब कुछ ग्रामीणों से बात की तो ग्रामीणों का कहना था– 'जो करेगा वो भरेगा'।

महान सुधारक थे महर्षि दयानन्द : अर्जुन देव

अरविन्द पाण्डेय
कोटा (राजस्थान)।

यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान करते श्रद्धालु -केसरी।

आज डी.ए.वी. स्कूल व आर्य समाज जिला सभा, कोटा के संयुक्त तत्वावधान मे महर्षि दयानन्द सरस्वती की जयंती की पूर्व संध्या पर डी.ए.वी. स्कूल परिसर में स्थित यज्ञशाला में देवयज्ञ किया गया। यज्ञ के मुख्य यजमान आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्डा तथा स्कूल की प्राचार्या सरिता रंजन गौतम रहीं। आर्य विद्वान व डी.ए.वी. स्कूल के धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य के पौरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ।

इस यज्ञ में आर्य समाजों के प्रतिनिधि, विद्यालय के स्टाफ तथा छात्र छात्राओं ने आहुतियां डालकर परमपिता परमात्मा से विश्व कल्याण एवं सुख समृद्धि की कामना की।

मुख्य यजमान अर्जुनदेव चढ्डा ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती महान् समाज सुधारक थे। जिन्होंने अंधविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियों को जड़ से उखाड़ने का काम किया तथा वैदिक संस्कृति की पुर्नस्थापना की। साथ ही समाज में महिलाओं को समानता का अधिकार सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द ने दिलाया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने कहा कि महर्षि दयानन्द नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने देश में सर्वप्रथम नारी पाठशाला जालंधर में स्थापित की थी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए आर्य समाज गायत्री विहार के प्रधान एवं महर्षि दयानन्द वेदप्रचार समिति के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने 'वेदों की ओर लौटो' का नारा दिया तथा जर्मनी से वेद मंगवाकर उनका हिन्दी अनुवाद किया।

आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक व शोभाराम ने कहा कि स्वामी दयानन्द के आदर्शों पर चलते हुए उनके शिष्य महात्मा हंसराज जी ने सर्वप्रथम लाहौर में डी.ए.वी स्कूल की स्थापना की और आज पूरे देश में डी.ए.वी. के 800 से भी अधिक स्कूल व कॉलेज हैं जहां वैदिक संस्कार दिए जा रहे हैं। शान्ति के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

हकीम सैयद हुसैन नक़वी

अलबारी दवाखाना

क्या आप इनमें से किसी भयंकर रोग से पीड़ित हैं, तुरंत संपर्क करें

विशेषज्ञ :-

गुर्दा, कैंसर, गुप्त रोग एवं हृदय

नोट :- मस्तिष्क कैंसर रोगी न मिलें

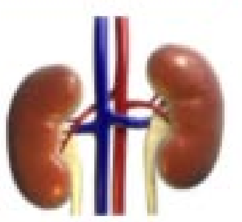

पता :- मोहल्ला लकड़ा, निकट सब्जी मंडी, अमरोहा-244221
मोबा. नं०- 09917358382

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 8822200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अपने पासपोर्ट साइज़ फोटो, नाम, पते व चलभाष सहित अविलम्ब हमें भेज दें। सहयोग राशि एकाउन्टपेयी चैक या धनादेश द्वारा भी भेजी जा सकती है। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी,
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.),
दूर.-05922-262033, चल.- 09758833783 / 08273236003

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक',
विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मित्र,
यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई,
डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी,
इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com